Impact Factor 6.261 ISSN- 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Multidiciplinary international E-research journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2019 Special Issue – 91

जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता

Chief Editor
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce college,
Yeola, Dist. Nashik (M.s.) India

Executive Editor of this Issue
Dr. Anil Kale
Asso. Prof. & Head of Hindi Dept.
GM'S Arts, Commerce & Science College,
Narayangaon, Tal. Junnar, Dist. Pune

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

Visit to - www.researchjourney.net

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2019

SPECIAL ISSUE – 91

जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editor of This Issue
Dr. Anil Kale
Asso.Prof. & Head of Hindi Dept.
GM'S Arts, Commerce & Science College,
Narayangaon, Tal. Junnar, Dist. Pune
(Maharashtra)

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 400/-

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal | ISSN- 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) –0.676 | January 2019 | UGC Approved No. 40705
Special Issue 91 , जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता

Editorial Board

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editor of This Issue
Dr. Anil Kale
Asso. Prof. & Head of Hindi Dept
GM'S Arts, Commerce & Science College,
Narayangaon, Tal. Junnar, Dist. Pune
Maharashtra

Co-Editors -
_ **Mr.Tufail Ahmed Shaikh**- King Abdul Aziz City for Science & Technology, Riyadh, **Saudi** Arabia.
_ **Dr. Anil Dongre** - Head, Deptt. of Management, North Maharashtra University, Jalgaon
_ **Dr. Shailendra Lende** - R.T.M. Nagpur University, Nagpur **[M.S.] India**
_ **Dr. Dilip Pawar** - BoS Member (SPPU), Dept. of Marathi, KTHM College, Nashik.
_ **Dr. R. R. Kazi** - North Maharashtra University, Jalgaon.
_ **Prof. Vinay Madgaonkar** - Dept. of Marathi, Goa University, **Goa, India**
_ **Prof. Sushant Naik** - Dept. of Konkani, Govt. College, Kepe, **Goa, India**
_ **Dr. G. Haresh** - Associate Professor, CSIBER, Kolhapur **[M.S.] India**
_ **Dr. Munaf Shaikh** - N. M. University, Jalgaon & Visiting Faculty M. J. C. Jalgaon
_ **Dr. Samjay Kamble** -BoS Member Hindi (Ch.SU, Kolhapur), T.K. Kolekar College, Nesari
_ **Prof. Vijay Shirsath** - Nanasaheb Y. N. Chavhan College, Chalisgaon **[M.S.]**
_ **Dr. P. K. Shewale** - Vice Principal, Arts, Science, Commerce College, Harsul **[M.S.]**
_ **Dr. Ganesh Patil** - M.V.P.'s, SSSM, ASC College, Saikheda, Dist. Nashik **[M.S.]**
_ **Dr. Hitesh Brijwasi** - Librarian, K.A.K.P. Com. & Sci. College, Jalgaon **[M.S.]**
_ **Dr. Sandip Mali** - Sant Muktabai Arts & Commerce College, Muktainagar **[M.S.]**
_ **Prof. Dipak Patil** - S.S.V.P.S.'s Arts, Sci. and Com. College, Shindhkheda **[M.S.]**

Advisory Board -
_ **Dr. Marianna kosic** - Scientific-Cultural Institute, Mandala, **Trieste, Italy.**
_ **Dr. M.S. Pagare** - Director, School of Languages Studies, North Maharashtra University, Jalgaon
_ **Dr. R. P. Singh** -HoD, English & European Languages, University of Lucknow **[U.P.] India**
_ **Dr. S. M. Tadkodkar** - Rtd. Professor & Head, Dept. of Marathi, Goa University, **Goa, India.**
_ **Dr. Pruthwiraj Taur** - Chairman, BoS., Marathi, S.R.T. University, Nanded.
_ **Dr. N. V. Jayaraman** - Director at SNS group of Technical Institutions,**Coimbatore**
_ **Dr. Bajarang Korde** - Savitribai Phule Pune University **Pune, [M.S.] India**
_ **Dr. Leena Pandhare** - Principal, NSPM's LBRD Arts & Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road
_ **Dr. B. V. Game** - Act. Principal, MGV's Arts and Commerce College, Yeola, Dist. Nashik.

Review Committee -
_ **Dr. J. S. More** – BoS Member (SPPU), Dept. of Hindi, K.J.Somaiyya College, Kopargaon
_ **Dr. S. B. Bhambar,** BoS Member Ch.SU, Kolhapur, T.K. Kolekar College, Nesari
_ **Dr. Uttam V. Nile** - BoS Member (NMU, Jalgaon) P.S.G.V.P. Mandals ACS College, Shahada
_ **Dr. K.T. Khairnar**– BoS Member (SPPU), Dept. of Commerce, L.V.H. College, Panchavati
_ **Dr. Vandana Chaudhari** KCE's College of Education, Jalgaon
_ **Dr. Sayyed Zakir Ali** , HOD, Urdu & Arabic Languages, H. J. Thim College, Jalgaon
_ **Dr. Sanjay Dhondare** – Dept. of Hindi, Abhay Womens College, Dhule
_ **Dr. Amol Kategaonkar** – M.V.P.S.'s G.M.D. Arts, B.W. Commerce & Science College, Sinnar.

Published by –
© **Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik**
Email : swatidhanrajs@gmail.com Website : www.researchjourney.net
Printer-
R.R. Graphics, Latur-
PRICE : 400 /-

प्रस्तुत विशेषांक में प्रकाशित शोध आलेखों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना जरुरी नहीं है

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

SPECIAL ISSUE – 91

Title of the issue : जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता

© PUBLISHED BY
Mrs. Swati Dhanraj Sonawane,
Director, Swatidhan International Publications, Nashik
E-mail : swatidhanrajs@gmail.com Website : www.researchjourney.net

D.T.P. & PRINTING
R.R. Graphis , Latur- 413512
Contact- 8149668999

EDITION :
11 Jan. 2019

PRICE : 400 /-

प्रस्तुत विशेषांक में प्रकाशित शोध आलेखों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना जरुरी नहीं है

38. सरकारी कार्यालय में हिंदी की आवश्यकता.........................	डॉ.प्रविण तुळशीराम तुपे	118
39. जनसंचार एवं तकनीक के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता...... विज्ञापनों में हिंदी भाषा का सशक्त योगदान	कांचन शेंदुर्णीकर ,	120
40. जनसंचार के माध्यम : विज्ञापन और हिंदी......................	डॉ.योगेश विठ्ठल दाणे	123
41. हिंदी का रोजगारोन्मुख परिदृष्य	डॉ. भाऊसाहेब नवले	. 127
42. मीडिया, समाज और हिंदी	डॉ. मिलिंद कांबळे	130
43. फिल्म क्षेत्र और हिंदी	सौ. योगिता अमोल देशपांडे	132
44. विज्ञापन क्षेत्र और हिंदी	कु. छाया रत्नाकर पांढरकर	134
45. नवइलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं हिंदी अध्यापन	डॉ. शेख मोहम्मद शाकिर	137
46. फिल्म क्षेत्र और हिंदी	श्रीम. जयश्री अर्जुन माथेसुळ	139
47. हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियाँ	प्रा.पटेकर विश्वनाथ चंद्रकांत	142
48. हिन्दी के विकास में नवइलैक्ट्रानिक माध्यमों का योगदान	आर. अरूणा	145
49. अनुवाद क्षेत्र और हिंदी	अश्विनी महादेव जाधव	148
50. विज्ञापन क्षेत्र और हिंदी भाषा (मुद्रित, श्रव्य, दृकश्रव्य माध्यम)......	प्रा. गणेश दुंदा गभाले	150
51. इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यम और हिंदी...........................	सौ. विद्या शामराव चौगले	153
52. जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता	अंबेकर वसीम	156
53. जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता	प्रा. शोभा कोकाटे	159
54. जनसंचार माध्यमों में रेडियो	राजेंद्र विट्ठल वरप	161
55. विज्ञापन : जनसंचार का सशक्त माध्यम.........................	प्रा. बी. एस भुजाडे	163
56. हिंदी के विकास में टेलिविजन का योगदान........................	सरला सूर्यभान तुपे	165
57. विज्ञापन क्षेत्र और हिंदी (मुद्रित, श्रव्य, दृक श्रव्य)	कविता दत्तु चव्हाण	167
58. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी	अविनाश मारूती कोल्हे	170
59. जनसंचार माध्यम में हिंदी : रोजगार के अवसर	डॉ. शरद भा. कोलते	172
60. अनुवाद क्षेत्र और हिंदी	श्रीगीरे जयश्री बालाजी	175
61. जनसंचार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	डॉ. रवीन्द्र सिंह	180
62. जनसंचार एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विविध आयाम–एक दृष्टि....	डॉ. प्रीति आत्रेय	183
63. जनसंचार माध्यमों में हिंदी की उपादेयता...........................	डॉ. भगत सारिका	185
64. हिंदी फिल्म, साहित्य व समाज	डॉ. दिग्विजय टेंगसे	188
65. जनसंचार के माध्यम प्रिंट मीडिया के विकास में हिन्दी का योगदान......	डॉ. अर्चना चतुर्वेदी	190
66. इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया और हिंदी	डॉ. नानासाहेब जावळे	192
67. नव इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी .... (कम्प्यूटर और इंटरनेट प्रणाली के विशेष संदर्भ में)	गणेश ताराचंद खैरे	195
68. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हिंदी की उपादेयता........................ (विज्ञापन के संदर्भ में)	प्रा. डॉ. मनाली सुर्यवंशी	198
69. नवइलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी	प्रा. संदिप बळवंत देवरे	201
70. जनसंचार - माध्यम और सामाजिक जागरूकता........................	प्रा. डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी	203
71. भारत में हिंदी पत्रकारिता का योगदान	डॉ. जालिंदर इंगले	206
72. अनुवाद : समकालीन संदर्भ में	डॉ. धन्या. के. एम	208
73. हिंदी जनसंचार माध्यम एवं रोजगार के अवसर.................	डॉ.राजाराम कानडे	210
74. अनुवाद क्षेत्र और हिंदी	प्रा. ललिता भाऊसाहेब घोडके	213

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal | ISSN- 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) –0.676 | January 2019 | UGC Approved No. 40705
Special Issue 91 , जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी

अविनाश मारूती कोल्हे
शोधछात्र, हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे, विश्वविद्यालय पुणे.

मीडिया भाषा, भावों की संप्रेषण का प्रभावी माध्यम है। जिसमें इलेक्ट्रॉनिक मीडिया अपने स्वरूप में प्रिंट मीडिया से एकदम अलग है। भले ही इसका विकास प्रिंट मीडिया से ही हुआ है। प्रिंट मीडिया के ही आदर्शों और परंपराओं की छाया की में फलफूल रहा है लेकिन इसका स्वरूप इसे कई मायनों में प्रिंट मीडिया से एकदम अलग अलग बना देता है। प्रिंट मीडिया जहाँ खबरों का ढाँचा खडा करता है, उन्हें सजाता–सवारता है वही इलेक्ट्रॉनिक मीडिया उन खबरों में जान फूंकने का काम करता है। अखबार में एक रोमांचक क्रिकेट मैच का विवरण छपता है, उसके चित्र छपते हैं। पाठक मैच की हाइलाटस् पढकर सारी जानकारी प्राप्त कर लेता है। लेकिन वही बात जब रेडियो पर रोमांचकारी पद्धति से हम सुनते हैं या टेलीविजन पर चलचित्रों के माध्यम से देखते और सुनते हैं तो वह अखबार की तुलना में अधिक प्रभावात्मक बन जाती है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की यह स्वरूपगत खूबी उसे अलग पहचान देती है। हालांकि अब अखबारों के भी इंटरनेट संस्करण आने लगे है। और वे खबरों को अधिक तेजी से पाठक तक पहुचाने लगें है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की अवधारणा ही खबरों के तेज, संजीव, वास्तविक और व्यापक प्रसारण से जुडी है। खबरों को सबसे तेज अथवा सजीव दिखा, सुनाकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया चमत्कारपूर्ण प्रभाव पैदा कर देता है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के सबसे प्रभावी साधन है टेलीविजन, रेडियो, कम्प्यूटर, मोबाईल, टेपरेकॉर्डर, सी. डी. कॅसेट, उपग्रह, सोशल माध्यमों के अंतर्गत फेसबुक, ट्वीटर, ब्लॉग, ईमेल, व्हॉटअप आदि नाम बताए जा सकते हैं। इन सभी माध्यमों के द्वारा ही किसी भी घटना को समाज तक अतिशिघ्र गति से पहुचाना संभव होता है। इस इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को प्रभावशाली बनानेवाली एक और बडी ताकत है वह है इसकी भाषा। इंसान अगर पढे लिखे हो तो अखबार पढकर दुनिया की जानकारी से अवगत हो सकता है। लेकिन यह इलेक्ट्रॉनिक मीडिया हर प्रकार के इंसानों को जानकारी देने में सक्षम है।

हिंदी हमारे भाषा के नाते ही नहीं अपनी उपयोगिता के नाते भी आज बाजार की सबसे प्रिय भाषा है। आप लाख अंग्रेजी के आतंक का विलाप करें काम तो हिंदी में ही करना है। यह हिंदी भाषा के ही ताकत है कि वह सोनिया गांधी से लेकर कैटरीना कैफ तक सबसे हिंदी बुलवा ही लेती है। हिंदूस्तान जैसे देश को एक भाषा के सहारे संबोधित करना हो तो वह सिर्फ हिंदी ही है। यह हिंदी का अहंकार नही तो उसकी सहजता की ताकत है। कुल मिलाकर हम कह सकते है कि हिंदी आज मीडिया, राजनीति, मनोरंजन और विज्ञापन आदि की प्रमुख भाषा है।

आज के विश्व को 'कम्प्युटर का विश्व' कह सकते हैं क्योंकि हमारे जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा बचा नहीं है, जहाँ कम्प्यूटर का असर न महसूस किया जाता हो। आजकल कम्प्यूटर टैकनालॉजी का उपयोग जीवन के सभी क्षेत्रों में किया गया हैं। गाडी, हवाईजहाज या सिनेमा टिकट का आरक्षण, बैकिंग, व्यापार, किसी संस्था का कामकाज, साधारण उद्योग से लेकर ब्रम्हांड की उडान तक की जानकारी हमें इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अंतर्गत प्राप्त होती है। इस में संदेह नहीं है कि आरंभ में कम्प्यूटर की भाषा अंग्रेजी ही रही लेकिन आजकल कम्प्यूटर प्रणाली हिंदी भाषा का प्रयोग प्रचूर मात्रा में होने लगा है। भाषा केंद्रित व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रों यथा भाषाशिक्षण, कोशनिर्माण, अनुवाद आदि में भी कम्प्यूटर का उपयोग किया जा रहा है। सन १९८३ में पहली बार भारतीय भाषाओ में विशेषकर हिंदी और तमिल भाषा में कम्प्यूटर पर लाने में सफलता मिली। यह यंत्र, सामग्री के स्तर पर भारतीय भाषाओं को लाने की कोशिश की। जिसके परिणाम स्वरूप डी. सी. एम का "सिद्धार्थ" तथा सी. एम. सी का "लिपि" शब्दसंसाधक विकसित हुए। १) भाषाशिक्षण के संदर्भ में अंग्रेजी जाननेवाले विदेशियों अथवा भारतीय के लिए पी. सी. पर स्वयं हिंदी सीखने हेतु 'लीली हिंदी' पैकेज का विकास किया गया है। सी. डेक पुणे द्वारा विकसित इस पैकेज का उद्देश्य सीखनेवाले को हिंदी बोलने और लिखने में पूरी दक्षता प्राप्त करने में सहायता करना है। कम्प्यूटर की सहायता से हिंदी न जाननेवाले अधिकारीगण सी डैक द्वारा विकसित " लीला हिंदी प्रबोध" नामक च्ब सेल्फ कम्प्यूटर की सहायता से प्रबोध स्तर की हिंदी का ज्ञान स्वयं प्राप्त कर सकते हैं। इस के माध्यम से कोई भी अधिकारी अपने कम्प्यूटर पर हिंदी के अक्षर, शब्द तथा वाक्यों को लिखना और बोलना सीख सकता है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अंतर्गत सोशल मीडिया के माध्यमों का हिंदी के प्रचार प्रसार में अत्यंत महत्वपुर्ण योगदान है। आजकल सामान्य से सामान्य व्यक्ति सोशल मीडिया का उपयोग करता है। वह अपनी उपस्थिति को मीडिया में खोजता है। हर संस्था, व्यक्ति, सरकार, कंपनी, साहित्य कर्मो से सामाजकर्मो तक और नेता से अभिनेता तक को सोशल मीडिया में वजन, प्रभाव और लोकप्रियता की पर तोला जा रहा है। इस नयी

तकनीकी सामाजिक शक्ति और भाषा के संबंध को भी हम समझने को कोशिश करें। हर वैज्ञानिक या तकनीकी अविष्कार यदि वह एक व्यापक समाज के लिए रोचक या उपयोगी है, तो वह अपनी एक नई जगह बना लेता है। जब यह नई तकनीक संवाद और संप्रेषण से जुडी हो तो स्वाभाविक है किवह अपनी विशिष्टताओं के साथ संवाद और संप्रेषण के नए–पुराने तरीकों, उपकरणों और तकनीकों को कुछ विस्थापित करके ही अपनी जगह बनती है। सोशल मीडिया जब से डेस्कटॉप, कम्प्यूटर, लैपटॉप से निकलकर मोबाईल फोन पर आया है तब से सर्वव्यापी हुआ है। इसने राजनीतिक रणनीतियों, विमर्ष और चुनावी नतीजों में अपनी जगह बनाई है। कंपनियों और उनके उत्पादों, सेवाओं के प्रचार, उपभोग, मार्केटिंग, और ग्राहकों तक पहुचने के तौर–तरीकों में बदलाव आया है। व्यापार उद्योग, शासन, मनोरंजन, राजनीति यदि क्षेत्रों के लिए तो यह एक आधुनिक मंच है। यह मंच सफल होता है इन इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की भाषा के बल पर। दरअसल भाषा के प्रमुख दो आयाम है। एक उसका शुद्ध भाषिक आयाम जिसमें उसके शब्दों, वाक्य रचना, व्याकरण, शब्दकोश, आदि पर ध्यान रहना चाहिए। दूसरी ओर भाषा का सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक संदर्भों में संभलकर प्रयोग होना चाहिए। इन माध्यमों ने हर नए माध्यम की तरह भाषा के तौर–तरीकों, शैलियों, वाक्य रचनाएँ, शब्दों की संरचना आदि को प्रभावित किया है। यह असर केवल भाषा के लिखित रूप पर ही नहीं तो भाषिक रूप पर भी दिखाई दे रहा है। इन माध्यमों ने मानो अपनी एक नई भाषा गढ़ ली है। भाषा और शब्दों के सौंदर्य, मर्यादा, गरीमा और स्वरूप की चिंता करनेवाले है ही, लेकिन भाषा की इस खिचडी, विकृत रूप के कारण आज की युवा पीढी भविष्य में किसी भी एक शुद्ध भाषा के दावेदार नहीं रहेंगी। यह खतरा इसलिए भी गंभीर होता जा रहा है कि युवा पीढ़ी के लोग साहित्यिक और विचारपूर्ण लेखन पढने से दूर जा रहे हैं। अच्छी और असरदार भाषा अच्छा पढ़ने से ही आती है। सोशल मीडिया का असर केवल नकारात्मक न होकर सकारात्मक भी है। ट्विटर के माध्यम से लोग हिंदी भाषा को विशिष्ट शब्दसीमा में बांधकर चुस्त और सशक्त बना रहे हैं। इसप्रकार से भाषा और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एक दूसरे के विकास में सहायक होते दिखाई देते हैं।

संदर्भ ग्रंथ –

विज्ञापन जनसंचार माध्यम और सामाजिक परिवर्तन – डॉ. अनिल पुरोहित
मिडिया कालीन हिंदी स्वरूप एवं संभावनाएँ – डॉ. अर्जुन चव्हाण
विज्ञापन की दुनिया – कुमुद पुरोहित
प्रयोजनमूलक हिंदी प्रासंगिकता एवं परिदृश्य – डॉ. सु .नागलक्ष्मी
मिडिया के सिद्धांत – एन. सी. पंत

SJIF Impact Factor - 5.67 E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (A)

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

आज़ादी के 75 वर्ष का हिंदी साहित्य

अतिथि संपादक
प्रोफेसर रजनी शिखरे
प्राचार्य
र. भ. अट्टल कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय गेवराई
जि. बीड महाराष्ट्र

कार्यकारी संपादक

डॉ. गजानन चव्हाण
प्रधान सचिव
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रो.डॉ.जिजाबराव पाटील
अध्यक्ष
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रा.संतोष नागरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
र. भ. अट्टल महाविद्यालय गेवराई

Chief Editor : **Dr. Girish S. Koli**, AMRJ
For Details Visit To - www.aimrj.com

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2023 Special Issue 07 Volume III (A) SJIF Impact- 5.67

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2023

Special Issue 07 Volume III (A)

आज़ादी के 75 वर्ष का हिंदी साहित्य

अतिथि संपादक

प्रोफेसर रजनी शिखरे

प्राचार्य

र. भ. अट्टल कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय गेवराई जि. बीड महाराष्ट्र

कार्यकारी संपादक

डॉ. गजानन चव्हाण	प्रो.डॉ.जिजाबराव पाटील	प्रा.संतोष नागरे
प्रधान सचिव	अध्यक्ष	हिंदी विभागाध्यक्ष
महाराष्ट्र हिंदी परिषद	महाराष्ट्र हिंदी परिषद	र. भ. अट्टल महाविद्यालय गेवराई

Akshara Publication

Plot No 143 Professors colony,

Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

AMRJ

January 2023 Special Issue 07 Volume III (A) SJIF Impact- 5.67

Editorial Board

-: Chief & Executive Editor:-

Dr. Girish Shalik Koli

Dongar Kathora

Tal.Yawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Code: 425301

Mobile No: 09421682612

Website:www.aimrj.com Email:aimrj18@gmail.com

-:Co-Editors :-

- **Dr. Sirojiddin Nurmatov**, Associate Professor, Tashkent Institute Of Oriental Studies, Tashkent City, Republic Of Uzbekistan
- **Dr.Vivek Mani Tripathi**, *Assistant Professor*, Faculty of Afro – Asian Languages and Cultures, Guangdong University of Foreign Studies, Guangzhou, Guangdong, China
- **Dr.Maxim Demchenko** Associate Professor Moscow State Linguistic University, Institute Of International Relationships, Moscow,Russia
- **Dr.Mohammed Abdraboo Ahmed Hasan,** Assistance Professor (English) The Republic of Yemen University of Abyan General manager of Educational affairs in University of Abyan ,Yemen.
- **Dr. Vijay Eknath Sonje,** *Assistant Professor* (Hindi) D. N. College, Faizpur [M. S.]
- **Mr. Nilesh SamadhanGuruchal,** *Assistant Professor* (English)Smt. P. K. Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India.
- **Dr. Shaikh Aafaq Anjum,** *Assistant Professor* (Urdu) Nutan Maratha College, Jalgaon. [M. S.] India.
- **Mr. Dipak Santosh Pawar,** *Assistant Professor* (Marathi)Dr. A.G.D. Bendale Mahila Mahavidyalya, Jalgaon [M. S.] India.

PEER REVIEW POLICY

AMRJ will send a copy of research work to the editorial board. The board will verify the same according to the rules of research methodology. Then plagiarism in the work will be checked. In case if the research methodology is not followed properly by the researcher, message will be given to the researcher and he/she will be asked to revise the work in a stipulated period.

After checking research methodology and plagiarism, the work will be sent to the Peer Review Committee.

SINGLE BLIND PEER REVIEW BY EXPERT PEER REVIEWERS

AMRJ adopts the Single Blind Peer Review Method. After checking research methodology and plagiarism, the work will be sent to the Peer Review Committee for review through email. AMRJ do not disclose the details of researcher to Peer Review Committee. The Peer Review Table will be displayed online according to the criteria decided by the Editorial Board. After the approval by Peer Review Committee, the research work will be published in the Issue. In case if any instructions received from Peer Review Committee, the same will be forwarded to the researcher and he/she will be asked to clear the matter. Editorial Board of AMRJ will be the final authority to decide whether a research work is to be published or not.

AMRJ Disclaimer:

For the purity and authenticity of any statement or view expressed in any article. The concerned writers (of that article) will be held responsible. At any cost member of Akshara's editorial Board will not be responsible for anyconsequences arising from the exercise of Information contained in it.

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (A) SJIF Impact- 5.67

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	'माझा प्रवास' का हिंदी अनुवाद	प्रोफेसर डॉ. अमोल पालकर	05
2	'मोहन दास' के बहाने आत्ममंथन	डॉ. विजय शिंदे	08
3	आप यहाँ है : संघर्ष और चेतना के विविध आयाम	प्रो.डॉ.विजयकुमार राऊत	12
4	समकालीन कवि ग.मा. मुक्तिबोध के काव्य पर मार्क्सवाद का प्रभाव	प्रा. डॉ. हनुमंत गायकवाड	16
5	आजादी के बाद की हिंदी कहानी: संवेदना के विविध आयाम	मुकुंदा निवृत्ती ठोंबरे डॉ. अनिल काळे	19
6	व्यंग्य साहित्य की विविधता और परसाई का लेखन	डॉ आभा सिंह	22
7	स्वतंत्र भारत के रंगमंचीय कलाकार का जीवन संघर्ष : काल कोठरी	प्रो.अशोक मर्डे	25
8	'लौटकर देखना' काव्य संग्रह में स्वतंत्र भारत का यथार्थ चित्रण'	कवि.प्रा.डॉ. देवीदास क.बामणे	28
9	आज़ादी के 75 साल : 'आदिवासी नहीं नाचेंगे'	डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण	36
10	भारतीय प्रवासी साहित्यकार सुनीता जैन की कहानियों में नारी अस्मिता की जमीन	डॉ.नवनाथ गाड़ेकर	40
11	समकालीन हिंदी कविता और राष्ट्रीयता (आजादी के 75 वर्ष का हिंदी काव्य)	डॉ.पंडित बन्ने	44
12	कुसुम अंसल के 'तापसी' उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ. मेदिनी अंजनीकर	47
13	आजादी के 75 वर्ष का हिंदी कथा - साहित्य	प्रा.अनिता किसन पाटोळे	49
14	आजादी के बाद हिंदी साहित्य में व्यक्त वृध्द विमर्श	अविनाश मारुती कोल्हे डॉ. अनिल काले	51
15	वर्तमान भारत की राजनीति का कठोर वास्तव 'बकरी'	प्रो. (डॉ.) बबन चौरे	55
16	आजादी के 75 वर्ष और हिंदी कविता	प्रा. हंबीरराव मारुती चौगले	57
17	निराला के काव्य में चित्रित प्रगतिवादी चेतना	प्रा.डॉ. संजय पिराजी चिंदगे	60
18	स्वाधीनता के सात दशक और नागार्जुन का साहित्य	डॉ. दिनेश प्रसाद साह	63
19	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श	प्रा. डॉ. सविता कचरू लोंढे	69
20	पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा में अभिव्यक्त किन्नरों की समस्याएँ	डॉ.जी.बी.उषमवार	72
21	तसलीमा के कविताओं में मानवाधिकार	फड आशा वैजेनाथ प्रो.डॉ. लहाडे मुरलीधर अच्युतराव	74
22	आज़ादी के अमृत महोत्सव तक के बाल-साहित्य में डॉ. परशुराम शुक्ल का स्थान	डॉ. माधव राजप्पा मुंडकर	77
23	समकालीन हिंदी कविता में 'पर्यावरण' संचेतना	डॉ. मनोहर जमधाडे	81
24	परिवार विघटन का दस्तावेज' – 'अश्क' के नाटकों के संदर्भ में	प्रो. महेमूद पटेल	84

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2023 Special Issue 07 Volume III (A) SJIF Impact- 5.67

14

आजादी के बाद हिंदी साहित्य में व्यक्त वृध्द विमर्श

शोध छात्र
अविनाश मारुती कोल्हे

शोध निर्देशक
डॉ. अनिल काले
हिंदी विभाग, सावित्रीबाई
फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

प्रस्तावना :-

हम जानते है एक किसान ऋतु के अनुरूप ही अपने खेत में धान की पैदावार करता है। ठीक उसी तरह एक साहित्यकार भी तत्कालीन परिवेश से प्रभावित होकर साहित्य सृजन करता है। भारत देश काफी दिनों तक अंग्रेजों की गुलामी से आजादी के बाद हर दृष्टि से बदल रहा था। जिसका प्रभाव साहित्य सृजन पर भी दृष्टिगोचर होने लगा।

हिंदुस्थान आजाद होने से पूर्व परिस्थितियों में हिंदी साहित्यकारोंने तत्कालीन परिवेश पर आधारित साहित्य लिखा है। जो अधिकतर एय्यारी, मजदूर, किसान, आजादी, गुलामी, मनोरंजन, तिलस्म, आंदोलन आदि विषयों पर लिखा जा रहा था लेकिन, हिंदुस्तान में 1947 स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद परिवेश के बदलने से साहित्य लेखन के आयामों में भी परिवर्तन होने लगा। जिसमें स्वतंत्रता पूर्व लेखन विषयों के अलावा दलित चेतना, आदिवासी चेतना, किसान चेतना, रती चेतना, किन्नर विमर्श, प्रकृति विमर्श, तकनीकी विमर्श, बाल विमर्श तथा वृध्द विमर्श आदि विषयोंपर खुलकर सृजनात्मक साहित्य लिखा जाने लगा। इसमें से वृध्द विमर्श एक ऐसा विषय है, जो हर एक इंसान से संबंधित है फिर वह चाहे किसी जाति धर्म का हो, दलित हो, किन्नर हो या फिर आदिवासी। क्योंकि इनमें हर एक को अपने जीवन काल में समय की गति से वृध्द होना ही है। यह हमारे जीवन काल की अंतिम अवस्था मानी जाती है। वास्तव में इस अवस्था में अपना जीवन हंसी खुशी से बिताना चाहिए किंतु ऐसा होता नहीं। अधिकांश लोग वृध्दावस्था को जीवन की एक अवस्था न मानकर समस्या मानने की भूल कर बैठते हैं, जो बिलकुल गलत है। वृध्दावस्था हमारे जीवन का अंतिम पडाव अवश्य है किंतु वह कोई अंतिम क्षण नहीं है। हम इस अवस्था में भी सुखी जीवन बिता सकते हैं। इन्हीं सब बातों पर स्वातंत्र्योत्तर काल में हिंदी साहित्यकारों ने अधिक खुबकर बात की है। कहानीकार सत्यराज द्वारा लिखित कहानी 'अनधिकृत स्वप्न' एक वृध्द पिता के अहंकार पर भाष्य करती है। कहानी में कुंती को उसके पति किशनलाल ने कहा था कि अजय के पास भले ही कोठी, कार इज्जत हो तुम वहां मत जाओ पर माँ की ममता ने उसे विवश कर दिया और वह चली जाती है। कुंती पर पहला आघात तब होता है, जब अजय उसे स्टेशन लेने नहीं आता और नहीं घर के किसी नौकर को भेजता है। कुंती स्वयं ही घर पहूँच जाती है, जहां घर के नौकर लोग उनका स्वागत करते हैं। अपने बेटे और बहू को न देखकर दादीजी नौकरों से पूछती है, कि सब लोग कहां गए? तब नौकर बतरते हैं कि, साहबा मेम साहब और बच्चों को लेकर पिक्चर देखने गए हैं। थोडी देर में बेटा घर आने पर बहाना बनाते हुए कहता है कि, इंजीनियर साहब के साथ पिक्चर देखने जाना पडा, कुंती का बेटा अजय अपनी पत्नी रजनी के साथ माँ के चरण स्पर्श करता है। साथ ही स्टेशन न पहुंचेन पर माफी भी माँगता है। जिस पर कुंती बड़े दिन से माफ भी कर देती है। पोता बंटी और पोती वंदना दादी की गोद में जाकर बैठते हैं और पुछते हैं कि, दादाजी क्यों नहीं आए? तब दादी बच्चों को बताती है कि, उन्हें कुछ काम था वे बाद में आएंगे। दादी कहती है कि, मैंने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की किंतु वे न माने। दादी अर्थात कुंती अपने पति किशनलाल से कहती है कि, उम्र के इस दौर में मैं इस तरह की जिंदगी नहीं जी सकूंगी आज क्या नहीं है उसके पास.... कोठी, कार, समाज में इज्जत। सब कुछ तो है उसके पास। मैं तो अपने बेटे के पास जाऊंगी। किशनलाल चाहकर भी कुंती को रोक नही पाता कुंती जाते हुए कहती है– "हॉं, हॉं मैंने हमेशा अधूरे इंसान जैसा जीवन जिया है। (आज तक इस गृहस्थी में फसकर) संघर्षों में ही समय कटा है मेरा। आज जबकि कुछ सुख–शांति से जीवन काटने का समय आया है तो आप मुझे ऐसा करने से रोकना चाहते है।"[1]

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2023 Special Issue 07 Volume III (A) SJIF Impact- 5.67

कुछ दिनों बाद कुंती को किशनलाल की बातों में सच्चाई नजर आने लगती है। कुंती का विश्वास था कि, उसका बेटा उसकी सेवा करेगा लेकिन समय की तेज धार में कुंती का विश्वास बह जाता है। जब डॉक्टर बताते है कि, कुंती को छूत का रोग लग गया है। तो बेटा और बहू दोनों का व्यवहार कुंती के प्रति बिलकुल बदल जाता है। इतना ही नहीं तो बहू बच्चों को भी दादी से दूर कर देती है। तब कुंती को पता चलता है कि, मेरा पति साथ होता तो यह नहीं होता।

वृध्दावस्था में व्यक्ति अधिकतर अतित में जीता है, उन्हीं चीजों को याद करता है जो उसने युवावस्था में अनुभव की थी। वह भावनात्मक रूप से कमजोर हो जाता है और उसने युवावस्था में किए हुए कामों की याद करता रहता है। जिसपर लोग भी उनके शारीरिक परिवर्तनों को देखकर वृध्द की युवावस्था से तुलना करने लगते हैं। भवगतीचरण वर्मा की कहानी 'पियारी' इस बात पर आधारीत दिखाई देती है। यह कहानी वृध्दावस्था में होनेवाले शारीरिक परिवर्तनों को नोट करती है। ''मनोहर वहाँ सामने मोड़ पर बैठी उस बुढ़ियाँ भिखारिन को देखते हो न! न जाने क्यों बिना मेरी इच्छा के मेरी नजर उस पर ठहर जाती है। ऐसा मालूम होता है कि, मैं उसे जानता हूँ यही नहीं वह भी मुझे जानती है। लेकिन वह मुझे पहचानती, शायद इसीलिए कि, मुझमें अधिक परिवर्तन हो गया है। लेकिन उसमें भी बहुत अधिक परिवर्तन हुआ वह भयानक है।''[2] आशय यह है कि, वृध्दावस्था में होनेवाले बदलाव शरीर, रंग, रूप को पूरी तरह से बदल देते हैं यहां तक कि, उनके मस्तिष्क की संरचना भी बदल जाती है। याददाश काफी प्रभावित होती है। वृध्द लोग अपने परिचितों को या तो पहचान नहीं पाते या बहुत देर से पहचानते हैं।

प्रभा खेतान दवारा लिखित 'आम का मौसम' कहानी वृध्द सेठानी भगवानी बाई के उपर लिखी गयी कहानी है। प्रस्तुत कहानी में वृध्द भगवानी बाई एक पतिव्रता नारी, मातृवत्सल नारी एवं एक आदर्श नारी के रूप में उभरकर सामने आती है।

प्रस्तुत कहानी की कथावस्तु सेठ रुकमादासजी से शुरु होती है, जो सेठानी भगवानी बाई के पति हैं। गर्मियों में वह बाजार जाते हैं और उनकी पत्नी के लिए आम लेकर आते हैं। वे अपने सर पर पसीना पोंछते हुए घर में प्रवेश करते हैं। पर उस समय उनकी पत्नी अपने पोते के लिए स्वेटर बुनती बैठी होती है पर उसकी बहू मना कर देती है। बहू के मना करने पर भी वह स्वेटर बुनती रहती हैं। यहां पर एक बूढ़ी माँ का अपने पोते के लिए प्यार और अपार स्नेह देखने को मिलता है। सेठ रुकमादासजी बाजार से आम खरीदकर आ गए हैं और वह अपनी बुढी पत्नी भगवानी को खाने के लिए एक बड़ा सा आम देते है पर वह कहती है–

''अपने सभी टाबरों को यह आम पसंद है, मैं अकेले आम कैसे खा लूं.... अकेले कैसे? तू और मैं दो जन तो हैं... खाले।''[3]

परंतु वृध्दा अपने पोतों को छोड़कर आम खाना पसंद नहीं करती उनके पति कहते हैं कि घरवालों लिए आम लाया हूँ तुम यह आम खा लो किंतु बुढ़ियाँ नहीं खाती। इस प्रसंग से वृध्दों के दिल में परिवार के बच्चों के प्रति कितना स्नेह होता है। यह दृष्टिगोचर होता है।

'दादी और रिमोट' यह सूर्यबाला जी दवारा लिखित गाँव से शहर लायी गई एक दादी की कहानी है। दादी गाँव से शहर आने पर वहां की चकाचौंद देखकर प्रसन्न हो जाती है। जो एक उंची इमारत की सातवीं मंजिल पर रहती है मानो उसे वहाँ पर लटका दिया गया हो।

वृध्दों की समस्याओं को लेकर इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता भी सजग दिखाई देती है। बहुत अधिक कविताएँ आज वृध्द विमर्श से संबोधित प्रकाशित हो रही हैं। हर एक माता–पिता का सपना होता है कि, हमारे बच्चें बड़े होकर समाज में इज्जत प्राप्त करें, खुद के पैरों पर खड़े होकर अपना नाम कमाएँ। इसके साथ ही उनकी और एक इच्छा होती है कि, हमारे बच्चें वृध्दावस्था में हमारी देखभाल भी करें। लेकिन वही बच्चें बड़े होकर अपनी माता–पिता की इज्जत नहीं करते हैं। कवि कुमारेंद्र जी अपनी वृध्दावस्था इस कविता में कहते हैं–

''कल तक जो थाम कर चले थे,
उंगली हमारी,
आज वो ही उँगली दिखा रहें हैं।''[4]

इस तरह माता–पिता ने अपने बच्चों को पाल–पोसकर बड़ा करते हैं लेकिन वही बच्चें माता–पिता को वृध्दावस्था में आँखें दिखाने लगते हैं। कई बार तो पीटने में भी हिचकिचाते नहीं हैं। वृध्द माता–पिता

के अस्तित्व को ही नकारा जाता है। इसी कारण वृध्दों के जीने का कारण या वजह ही समाप्त हो जाती है। बहुत सारे घरों में वृध्द लोग एक कोने में हर समय पड़े रहते हैं। जैसे घर की कोई बेकार चीज एक कोने में रख दी हो जिसका परिवार में कोई महत्व नहीं है। वृध्दों के प्रति समाज का यही दृष्टिकोन बनता जा रहा है।

चित्रा मुद्गल दवारा लिखित 'गिलिगड्डु' में सेवानिवृत्त सिविल इंजिनियर बाबू जसवंतसिंह और रिटायर्ड कर्नल विष्णु नारायण स्वामी इन दोनों की कथा है। दोनों एक दिन सैर करते समय अनायास ही मिल जाते हैं। एक–दूसरे के दुःख दर्द को बाटते हुए दोनों में घनिष्ट दोस्ती हो जाती है। कर्नल स्वामी अपने आदर्श परिवार की कथा सुनाते हैं लेकिन उनकी जिंदगी में सभी बातें ठीक इसके विपरित घटित होती हैं। उनके तीन बेटे हैं तीनों ही शादी के बाद उनसे अलग रहते हैं। उनकी प्रिय बहु अनुश्री अपनी डेढ़ साल की जुडवाँ बेटियों को छोड़कर अपने नृत्य गुरु के घर जा बैठती है। अपनी पोमियों को देखने के लिए उनसे मिलने के लिए उन्हें चोरी छिपे जाना पड़ता है। कर्नल की संपत्ति के लिए उनका मंझला बेटा नारायण उनसे झगड़ा तक करता है। हद तो तब होती है जब नारायण गुस्से में पागल होकर अपने पिताजी को पीट देता है। मार से लहुसुहान कर्नल जी अस्पताल में भर्ती हो जाते है। बोलने के काबील होने के बावजूद भी वे अपने बेटे के खिलाफ कोई भी किस दर्ज करने से साफ–साफ इंकार करा देते हैं। इस प्रसंग से यह नज़र आता है कि एक पिता अपने खून को पसीने में तपदील कर मेहनत से अपने बच्चों का लालन–पालन करता है, किंतु वही बच्चें संपत्ति के लिए अपने ही माता–पिता के जान पर उतर आते हैं। कर्नल की दर्दनाक मौत के बाद दाहा संस्कार के लिए बडे बेटे और पत्नी बैंगलोर से आते हैं। लेकिन अन्य दोनों बेटे अडचनों के चलते दाह संस्कार में उपस्थित नहीं हो पातें। बडा बेटा ही दाह संस्कार करता है, किंतु चौथ की क्रिया करने हेतु उसके पास समय नहीं होता इसीलिए वह वापस बैंगलोर लौट जाता है। बैंगलोर में अपने रिश्तोदारों के साथ ही वहाा तेरहवी का कार्यक्रम संपन्न करता है। इसपर कर्नल की पड़ोसन मिसेज श्रीवास्तव कहती है, "ऐसी कसाई औँलादों से तो आदमी निपुता भला। हमें इस बात का कोई गम नहीं कि, हमारी कोई अपनी औलाद नहीं।"[5]

वहाँ से लोटकर जसवंत सिंह नौकरानी सुनगुनिया के नाम पर अपने जीवन की वसीयत बदल ने का निश्चय करते हैं। और कानपुर वापस जाकर अपने जीवन का नया पड़ाव अपनी गिलिगड्डु कात्यायिनी कुमुदनी के साथ बिताना चाहते हैं। उनके मरणोपरांत उनके बेटों की आने की संभावना नहीं है। इसलिए वे अपनी वसीयत में यह भी जोड देते हैं कि, सुनगुनियें को लड़के रामरतन अभिषेक आसरे ही उनकी कपाल क्रिया करें। उसे ही वह अपने दाह संस्कार का अधिकार देते हैं। बाबू जसवंतसिंह आपने बेटे के पास तिरस्कृत होकर रहने के बजाय अपनी बुध्दि युक्ति एवं संपत्ति के बल पर अपने इच्छा नुसार जहां आदर, सम्मान, सेवा सुश्रुशा और ममत्व मिलता है वहाँ चले जाते हैं।

'दौड़' उपन्यास के माध्यम से ममता कालिया जी ने युवा वर्ग की मानसिकता और संवेदनशून्यता की ओर संकेत किया है। उपभोगतावादी संस्कृति के बच्चें इतने दौड़ रहें हैं कि, उनके पास अपने रिश्तों को निभाने के लिए भी समय नहीं है। दौड़ उपन्यास के रेखा और राकेश बच्चों के नोकरी के लिए जाने के बाद एकदम अकेले हो जाते हैं। अकेलेपन और उदासी के कारण दोनों काफी व्यथित होते हैं। पवन अपनी पसंद के अनुसार स्टैला नामकी लडकी से विवाह करता है। जो कमाऊ और कैरियरिस्ट युवती है। विवाह के कुछ दिनों बाद ही वे काम के सिलसिले से अलग–अलग शहरों में रहते हैं। दोनों का दाम्पत्य जीवन इंटरनेट, ई–मेल, सर्फिंग में बीतता जाता है। राकेश और रेखा दोनों एक–दूसरे का सहारा बनकर इस भ्रम में रहते हैं कि बेटे कभी कभार वापस आकर उनका सहारा बनेंगे। वही दो दिन की जिंदगी वे जी भरकर जिएंगे। पीडा, ग्लानि, भय, निराशा, अकेलेपन को दूर करने के लिए व्यस्त रहने का प्रयास करते हैं जैसे घूमने जाना, गप्पे लड़ाना, रामचरित मानस पढ़ना आदि। परंतु सोनी साहब की मृत्यु और सघन का ताईवान के स्थानिक राजनीति में सक्रिय हो जाने से दोनों पूरी तरह से हील जाते हैं। पिताजी जब सघन को वापस बुलाते हैं, तो यह अपने पिताजी से पैसों का हिसाब माँगते हुए कहता है– "अपने इतने बरसों में क्या किया? दोनों बच्चों का खर्च आपके सिर से उठ गया। घूमने आप जाते नहीं, पिक्चर आप देखने नहीं, दारु आप पीते नहीं फिर आपके पैसे का क्या हुआँ।"[6] इस प्रकार अपने ही पिता को कटघरे में खड़ाकर सवाल पुछता है। एक बूढ़ा निर्धन बाप इसके क्या उत्तर दे सकता था। आखिर कार सघन ताईवान में ही रहने का फैसला कर लेता है तो यहां पर माता–पिता उसकी राह देखते रह जाते हैं। बेटे की चिंता और विरह की भावना की प्रचूरता ही इस उपन्यास का समापन है।

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (A) SJIF Impact- 5.67

इस प्रकार मैंने स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य से वृध्दावस्था पर मेरी जानकारी अनुसार संक्षिप्त विचार–विमर्श करने का छोटासा प्रयत्न किया है। निष्कर्षः वृध्दावस्था पर हम कह सकते हैं कि वृध्दावस्था कोई समस्या नहीं है वह तो एक अवस्था है जिससे काल चक्र के अनुसार हर एक व्यक्ति गुजरना ही है। जरुरत है हमें इस अवस्था की मानसिकता को समझने की। जिसप्रकार माता–पिता अपने बच्चों का शिशुवस्था में खयाल रखते हैं। तो उन बच्चों को भी बड़े होने के बाद जब उनके माता–पिता वृध्द होते हैं तो उनका खयाल रखना आवश्यक है। इन वृध्दों का खयाल रखते समय युवा पीढ़ी को उनकी मानसिकता को भी ध्यान में रखना होगा क्योंकि कहते है नापचपन में बचपन होता है। "हम युवा पीढ़ी के लोग यदि वृध्दों का खयाल नहीं रखेंगे तो आनेवाली पीढ़ी भी हम से सरोकार नहीं रखेगी क्योंकि हम "जो बोएंगे वही तो पाएंगे।" इसी उम्मीद से सकता हूँ लेकिन जाते–जाते मन की बात– "कुर्सी पर बैठकर भरी जवानी में बुढ़ापे की बात करता हूँ, /कही वर्तमान भविष्य को खा न जाए, / इसलिए खुद ही खुद को टोकता हूँ।"

निष्कर्षत :–

हम कह सकते हैं कि हमने वर्तमान में पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण के दौर में अपने जीवन की आवश्यकताओं बढ़ा लिया है जिनकी पूर्ति की होड़ लगी हुई है। जिस के कारण समाज में पीढीगत अंतर बढ़ता जा रहा है। पुरानी पीढ़ी को नई पीढ़ी से और नई पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी से सामजंस्य बढ़ाना होगा, नही तो यह अंतर बढ़ता ही चला जाएगा। इस संदर्भ में चंद्रमौलेश्वर प्रसाद लिखते है, "बुढ़ापे को एक नई दृष्टि से देखने की आवश्यकता है, एक ऐसी दृष्टि से जिसमें संवेदना हो और बूढ़ों के लिए आदर व सम्मान का जीवन देने की आकांक्षा हो।"[7] हमें इस समस्या का हल निकालना होगा जिससे समाज में वृध्दों का सम्मान बढ़े न कि उन्हें बेकार समजा जाए। समाज को वृध्दों की उपयोगिता का दर्शन कराना होगा तब जाकर समाज का दृष्टिकोण बदलेगा। वृध्दों के ज्ञान एवं अनुभवों का नई पीढ़ी को लाभ उठाना चाहिए जिससे वह अपने भविष्य को सवार सकेंगे। इस दृष्टि सरकार, सामाजिक संगठनों, साहित्यकारों और समाज को एक जुट होकर प्रयास करना होगा। क्योंकि समाज का हर एक नवजवान एक ना एक दिन बुढ़ा होनेवाला है।

AMRJ

संदर्भ–

1. 'अनाधिकृत स्वप्न'– सत्यराज, वृध्दावस्था की कहानियाँ। सं– गिरिराजशरण, पृ.117
2. 'प्रतिनिधि कहानियाँ'– भगवतीचरण वर्मा राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1988, पृ. 67–68
3. 'आम का मौसम'– पुष्पपाल सिंह, अभिरुचि प्रकाशन दिल्ली, पृ.171
4- Kavira Sangrah. blogspot. in 2009/03/blog-post 08 html.
5. 'गिलिगड्डु उपन्यास– चित्रा मुद्गल, पृ.63
6. दौड़ उपन्यास– ममता कालिया, पृ.85
7. वृध्दावस्था विमर्श लेखक– चंदमौलेश्वर प्रसाद संपादक, ऋषभदेव शर्मा, परिलेख प्रकाशन, नजीबाबाद, प्रथम संस्करण 2016

SJIF Impact Factor - 5.54

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

February 2022 Special Issue 04, Vol. VI (C)

CONTEMPORARY TRENDS IN HUMANITIES, COMMERCE AND LIBRARY SCIENCE (CTHCLS 2022)

Guest Editor

Dr. Ganesh Anant Thakur

Principal

Mahatma Phule Arts, Science and Commerce College, Panvel.

District. Raigad. Maharashtra. 410206

Executive Editor

Mr. Sopan L. Gove

IQAC Co-ordinator

M.P.A.S.C. College, Panvel

Associate Editor

Mr. Sunil S. Avachite

Librarian

M.P.A.S.C. College, Panvel

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ

For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

February 2022 Special Issue 04 Volume VI (C) SJIF Impact- 5.54

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

February 2022

Special Issue 04 Volume VI (C)

CONTEMPORARY TRENDS IN HUMANITIES, COMMERCE AND LIBRARY SCIENCE (CTHCLS 2022)

Guest Editor

Dr. Ganesh Anant Thakur

Principal

Mahatma Phule Arts, Science and Commerce College, Panvel.

District. Raigad. Maharashtra. 410206

Executive Editor

Mr. Sopan L. Gove

IQAC Co-ordinator

M.P.A.S.C. College, Panvel

Associate Editor

Mr. Sunil S. Avachite

Librarian

M.P.A.S.C. College, Panvel

Akshara Publication

Plot No 143 Professors colony,

Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
AMRJ
February 2022 Special Issue 04 Volume VI (C) SJIF Impact- 5.54

Editorial Board

-: Chief & Executive Editor:-

Dr. Girish Shalik Koli
Dongar Kathora
Tal.Yawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Code: 425301
Mobile No: 09421682612
Website:www.aimrj.com Email:aimrj18@gmail.com

-:Co-Editors :-

- **Dr. Sirojiddin Nurmatov,** Associate Professor, Tashkent Institute Of Oriental Studies, Tashkent City, Republic Of Uzbekistan
- **Dr.Vivek Mani Tripathi**, *Assistant Professor*, Faculty of Afro – Asian Languages and Cultures, Guangdong University of Foreign Studies, Guangzhou, Guangdong, China
- **Dr.Maxim Demchenko** Associate Professor Moscow State Linguistic University, Institute Of International Relationships, Moscow,Russia
- **Dr.Chantharangsri Phrakhrusangkharak Yanakorn,** Assistance Professor Songkhla,Thailand
- **Dr.Mohammed Abdraboo Ahmed Hasan,** Assistance Professor (English) The Republic of Yemen University of Abyan General manager of Educational affairs in University of Abyan ,Yemen.
- **Dr. Vijay Eknath Sonje,** *Assistant Professor* (Hindi) D. N. College, Faizpur [M. S.]
- **Mr. Nilesh SamadhanGuruchal,** *Assistant Professor* (English)Smt. P. K. Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India.
- **Dr. Shaikh Aafaq Anjum,** *Assistant Professor* (Urdu) Nutan Maratha College, Jalgaon. [M. S.] India.
- **Mr. Dipak Santosh Pawar,** *Assistant Professor* (Marathi)Dr. A.G.D. Bendale Mahila Mahavidyalya, Jalgaon [M. S.] India.

AMRJ Disclaimer:

For the purity and authenticity of any statement or view expressed in any article. The concerned writers (of that article) will be held responsible. At any cost member of Akshara's editorial Board will not be responsible for anyconsequences arising from the exercise of Information contained in it.

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

AMRJ

February 2022 Special Issue 04 Volume VI (C) SJIF Impact- 5.54

Sr.No.	Title of the paper	Author's Name	Pg.No
23	COVID-19 आणि आशा भविष्यातील विषाणूंच्या धोक्यांसाठी मानसिक रणनीती	डॉ. पुरुषोत्तम परीट	85
24	भारत-चीन संबंध : दशा आणि दिशा	डॉ .आय . पी .कोकणे	88
25	महाराष्ट्रातील सामाजिक व राजकीय चळवळी आणि विचारधारा	प्रा. महेश बिऱ्हाडे	92
26	स्त्रीवादाचे समकालीन प्रवाह	डॉ. सौ. हेमलता आनंद सावंत	95
27	घायपात वनस्पतीचे जलसंधारण, मृदासंधारण व जैवविविधता संवर्धनातील महत्व	डॉ. राजाराम आप्पाजी पाटील	97
28	शाश्वत शेतीची सद्यस्थिती	डॉ. मुरलीधर पंडित गायकवाड	100
29	हरितग्रंथालये: काळाचीगरज	प्रा. वाय.बी. लबडे	104
30	महाविद्यालय ग्रंथालयमध्ये ई-संसाधने आणि माहिती सेवा उपयुक्त	श्री लिनताज भास्कर ऊके	109
31	ग्रंथ संरक्षण : काल, आज आणि उद्या	डॉ. शीला गोडबोले	114
32	समकालीन भारतीय इतिहास 1947 ते 2000	प्रा. डॉ. प्रज्ञा कामडी	117
33	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श	प्रा. पटेकर व्ही.सी.	123
34	मंजुल भगत के 'दूत' कहानी संग्रह में स्त्री विमर्श	प्रा. बगनर डी.के.	126
35	आदिवासी महिलाओं से शोधरुपी विशिष्ट समालाप	डॉ.संध्या जैन	128
36	समकालीन महिला साहित्यकारों के साहित्य में नारी-विमर्श	डॉ. सतीश शिंदे	131
37	साहित्य और सिनेमा का अंतसंबंध:	प्रा. स्वाती चव्हाण	135
38	हिंदी साहित्य में दलित विमर्श	प्रा. नारायण बागुल	137
39	`एकलव्य से संवाद' कविता में आदिवासी संवेदनाए	प्रा. मनोहर लोटे	139
40	साहित्य और सिनेमा	डॉ. पी.आर. नलावडे	142
41	किन्नर उदारीकरण: उद्यतन भारतीय समाज	डॉ. किरण खन्ना	145
42	`सीता मौसी' उपन्यास में स्त्री-संघर्ष	राठौड़ ज्योति चंद्रकांत	148
43	डॉ. विवेकी राय के समकालीन कहानियों में दलित विमर्श	डॉ. बामणे डी. के.	153
44	किन्नर विमर्श: थर्ड जेंडर के अधिकारों की और बढ़ते कदम	जयवीर सिंह	159
45	मीराबाई के काव्य में 'ऋतुवर्णन'	डॉ. संगीता माळी	163
46	हिंदी साहित्य में अभिव्यक्त वृद्ध विमर्श	प्रा. अविनाश कोल्हे	168
47	समाज और साहित्य का सिनेमापर प्रभाव	प्रा. राजेन्द्र देवाळकर	171
48	हिंदी साहित्य और वृतचित्र	प्रा. संदीप काळे	174
49	राजनीति विज्ञान और संशोधन एवं संकल्पना	प्रा. सुधाकर कांबळे	176

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

February 2022 Special Issue 04 Volume VI (C) SJIF Impact- 5.54

46

हिंदी साहित्य में अभिव्यक्त वृद्ध विमर्श

प्रा. अविनाश मारुती कोल्हे

हिंदी विभाग,

टिकाराम जगन्नाथ महाविद्यालय खडकी, पुणे

हम सदियों से सुनते आए हैं कि मनुष्य समाजशील प्राणी है अर्थात मनुष्य से परिवार बनता है और परिवार से समाज। परिवार की संकल्पना मनुष्यों के एक साथ एक ही घर में रहने से पूरी होती है। जिसके बिना समाज की निर्मिती संभव ही नहीं हो सकती है। किंतु वर्तमान समय में विडंबना यह है कि, जिस नींव की वजह से परिवार की संकल्पना की जाती है उसी से ही आज का पश्चिमी सभ्यता का शिकार युवा वर्ग मानो नफरत करता है। उनसे बात करने का भी समय उनके पास नहीं होता है। कहां तक कि उन्हें अपने उपर बोस समझकर अपने से हमेशा के लिए अलग कर नया घर बसा लेते हैं। युवा वर्ग की ओर से इस तरह वृध्दोंकी व होनेवाली उपेक्षा का सुत्रपात तो सदियों पहली महाभारत और रामायण से साहित्यिक रूप में होता दिखाई देता है।

हमारे देश के आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी कहते हैं, कि भारत देश वर्तमान में युवा देश है अर्थात हमारे देश में सबसे अधिक युवा जनसंख्या हैं। मोदीजी का यह कथन उचित भी प्रतित होता है और हमारे लिए गर्व की भी बात है लेकिन इस संदर्भ में विश्व स्वास्थ्य संघटन का निरीक्षण है कि, आनेवाले 30-40 वर्षों में आज का दुनिया का युवा भारत देश सबसे अधिक वृध्दों का देश होगा। यह बात हमें सोचने पर मजबूर करती है तब हमारे देश का क्या होगा? हिंदी साहित्य लिखनेवाली काफी लेखकों और कवियों ने वृद्धावस्था पर साहित्य सृजन के माध्यम से विचार प्रस्तुत किए हैं। जैसे- बूढ़ी काकी, स्वामिनी, माँ, सुभागी (प्रेमचंद) चीफ की दावत, यादे, खून का रिश्ता (भीष्म सहानी) ममता, बेडी, (जयशंकर प्रसाद) समय पागल है, कौन जाने (यशपाल) वसीयत (भगवती चरण वर्मा) आजादी (ममता कालिया) उधार की हवा, बांसफल, छत पर दस्तक (मृदुला गर्ग) वापसी (उषा प्रियवंदा) फाइल दाखिल वफ्तर (गिरिराज किशोर) इन कहानियों के साथ-साथ अंतिम अरण्य (निर्मल वर्मा) गिलीगड्डू (चित्रा मुद्गल) दौड (ममता कालिया) जीने की राह (विजय राही) रेहन पर रग्घू (काशीनाथ सिंह) अपने-अपने अजनबी (अज्ञेय) ढ़ाई घर (गिरीराज किशोर) समय सरगम (कृष्णा सोबती) आदि बताए जा सकते हैं।

प्रेमचंदजी द्वारा लिखित 'बूढ़ी काकी' कहानी के बुद्धिराम और रुपा का विचार है कि, बूढ़ी काकी का काम घर में उत्पात मचाना है। यहां समस्या न काकी के स्वास्थ्य की है और न की उसके पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन की। समस्या तो उसके जायके की है। यह आफत उस दिन से आयी है, जिस दिन इस अमीर विधवा बूढ़ी ने अपने बेटों की मृत्यु के बाद सारी जायदादा भतीजे बुध्दिराम के नाम लिख दी। जिसके बाद उसकी परनिर्भरता शुरु होती है।

रवींद्र कालिया द्वारा लिखित 'बुढवा मंगल' कहानी में एकाकीपन और अलगापन का ताना बाना बुना गया है। प्रस्तुत कहानी में अपने बेटे द्वारा बुलाया जाने पर वृद्ध पिता ट्रेन के एसी. डिब्बे से बैंगलोर जा रहें होते हैं तब ही उन्हें अपने जीवन साथी की याद आती है- "उसे अब लगा कि, अब वह कोल्हू के बैल की तरह जीवन बिता रहा है। इस आराम देह गाड़ी में उसे अपनी बुढ़ियाँ की बड़ी तेज याद आई। वह साथ में होती तो कितना खुश होती?"[1]

'एक बूढ़े की मौत' कहानी में शशि भूषण शर्मा ने वृध्द व्यक्ति की अकुलाहट को व्यक्त करने का प्रयास किया है। कहानी के प्रमुख पात्र जानकी बाबू अपने आपको अकेला महसूस करते तो बाहर घूमने चले जाते है। कहानीकार ने कहानी के माध्यम से अपने ही विचारों का एक रूप से वाणी देने का प्रयास किया है। "जानते हो जिंदगी में मृत्यु का आना कितना जरुरी है....उस फुल को देखो और मेरी बातों की ओर ध्यान से सुनो।"[2]

'दौड़' उपन्यास में ममता कालिया ने उपभोक्तावादी संस्कृति से हमें अवगत किया है। जिसमें आज का युवा वर्ग पूरी तरह से ग्रसित होता चला जा रहा है जिसके चलते माँ-बाप को भी भूल बैठते हैं। यही कारण है कि आजकल मानवी मूल्योंकी हानी हो रही हैं। ममता कालिया ने पवन, स्टेला और सहान के जरिये एक ओर जहां पारिवारिक संबंधों में आयी विवशता को दर्शाया है तो वही दूसरी ओर एक ऐसे कटु सत्य के भी दर्शन कराए है जिसको परिवार प्राय: वे सभी भुगत रहें हैं। जिनके बच्चें पराये हो गए हैं। मिस्टर और मिसेज सोनी ऐसे ही दो मजबूर माता-पिता हैं जिनका बेटा सिध्दार्थ विदेश में जाकर बस गया है। यहा मिस्टर सोनी को अचानक दिल का दौरा पड़ता है, जिसके कारण उनका निधन हो जाता है। जब सिध्दार्थ को अंतिम संस्कार में बेटे का कर्तव्य निभाने हेतु बुलाया जाता है तो सिध्दार्थ घर पहुँचने में सप्ताह लगेगा यहा बहाना बनाते हुए माँ को समझाते हुए कहता है- "हम सब तो आज लुट

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429
February 2022 Special Issue 04 Volume VI (C) SJIF Impact- 5.54

गए मम्मा, लोग बता रहें है मेरे आने तक डैडी को रखा नहीं जा सकता। आप ऐसा कीजिए इस काम के लिए किसी को बेटा बनाकर दाह-संस्कार करवाइए। मेर लिए तेरह दिन रुकना मुश्किल होगा।"[3] यह है आज के युवा वर्ग की सोच एवं अपने माता-पिता के प्रति कर्तव्य-बोध।

'लालटीन की छत' उपन्यास की पात्र काया अकेलेपन के कारण डरती भी है और बड़बड़ाती भी है। "दिन भर का अकेलापन, गुस्सा, हताशा आपस में गूँथ कर एक धुध का गोला सा बन जाते जो न इतना कोमल होता है कि, आसुओं में पिघलकर बाहर आ सके न इतना सक्त कि वह उसकी पकड़ में आकर किसी सुझ किसी समझदारी की सात्वंना में बदल सकें।"[4] इसके अलावा यह टकराहट ही अलगावपन एवं बेगानापन जैसी मानसिकता का कारण बन जाती है जिसके कारण वृद्ध तंग आकर मृत्यु की राह देखते हैं।

चित्रा मुद्गल द्वारा लिखित उपन्यास 'गिलिगड्डू' में वृध्द जसवंत सिंह अपने पोते के जन्मदिन पर पार्टी देना चाहते हैं और भावनात्मक रूप से बच्चे से जुड़ने की कोशिश भी करते हैं। परंतु उसके द्वारा दिया गया अपने पिता को करारा जवाब उसके दिल को ठेंस पहुँचाता है, "उसका यह कार्यक्रम उसके दोस्तों के साथ है, घरवाले इसमें शामिल नहीं होंगे। मम्मी को वैसे भी जन्मदिन मनाने में झंझट होता है- न न दादू। हम अपने से बड़े किसी को भी नहीं ले जाएगे वरना पार्टी बोरिंग हो जाएगी।"[5] वृध्दों की जीवन में यही एकमात्र आशा होती हैं कि, वृध्दावस्था में उसके अपने साथ हो परंतु वही अपने लोग उसे वृध्द मानकर परिवार की गतिविधियों में शामिल करने से मना करते है।

'समय सरगम' उपन्यास में कृष्णा सोबती जी ने कामिनी और दमयंती जैसी स्त्रियों के माध्यम से यह दशार्या है कि, उसके पास सब कुछ होते हुए भी परिवार से दूर हो गयी है। दमयंती अकेली रहती है और अरण्या से अपने भावनाओं व्यक्त करते हुए कहती है- "बच्चे साथ रहे, हैं मेरा घर मेरा किचन चल रहा है खर्चा मैं कर रही हूँ और मैं अकेली पड़ी हूँ। बिना इजाजत के मेरा सामान इधर से इधर करते रहते हैं। पीछे आश्रम गयी तो माधव को धमकाते रहते हैं। बताओं ममा के लॉकर की चाभी कहाँ है.....कुछ कहो अरण्या। बच्चों की ऐसी हरकत से मेरा धीरज खत्म हो रहा है।"[6] सहज रूप से अकेलापन तब बोझ बन जाता है जब व्यक्ति अपनो से दूर रहता है। परिणाम स्वरुप मानसिकता में बदलाव आने लगता है। ईशान और अरण्या के माध्यम से लेखिका ने वृध्दों की कुछ अन्य समस्याओंपर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

'अंतिम अरण्य उपन्यास' में वृध्दों की स्थिति एवं उनकी नैतिकता से संबंधित है। उम्र का वृध्दावस्था यह पड़ाव अपनों से अर्थात अगली पीढ़ी के लोगों से अपेक्षाएँ करते परंतु जब नई पीढ़ी उन अपेक्षा पर खरी नहीं उतरती। तब मानसिक टकराहट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। प्रस्तुत उपन्यास में कुछ पात्र ऐसे भी है जो अंधेरे की यातना से निर्मित है। मेहरा साहब एक ऐसा पात्र है, जो द्वद्वात्मक मानसिकता से पीड़ित दिखाई देता है। वह औरों की तरह शारीरिक रूप से कमजोर, खासते हुए वृध्द नहीं है तो मानसिक रुपा से अस्थिर पात्र है।

हिंदी साहित्य वृध्दावस्था की यह चर्चा न केवल कथा साहित्य में ही दस्तक नहीं दे रहा अपितु पद्य साहित्य भी इससे वंचित नहीं हैं। हिंदी साहित्य में चर्चित कवियों में से अनामिका, निराला और मैथिलीशरण गुप्त आदि यो ने वृध्दावस्था के संदर्भ में अपने विचार कविताओं के माध्यम से व्यक्त किए है। मैथिलीशरण गुप्त जी ने इस संदर्भ में कहा है-

"अब वे वासर बीत गए,
मन तो भरा-भरा है लेकिन,
तन के सब रस रीत गए,
चमक छोड़ चौमासे बीत,
कंवल छोड़कर शीत गए,
लेकर मधु की उष्मा सारी,
मेरे मन के पीट गए,
अब तो कावल गूज बची है,
जीवन सब गीत गए,
इस राम जाने जीवन में,
हम हारे या जीत गए।"[7]

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

February 2022 Special Issue 04 Volume VI (C)

SJIF Impact- 5.54

आम तौरपर वृध्दों को शारीरिक एवं मानसिक त्रासदी परिवार से अलगाव, अकेलेपन का एहसास, आर्थिक असमर्थता, पीढ़ीगत वैचारिक मतभिन्नता आदि समस्याओं से सामना करना पड़ता है| वृध्द सहजता से समाज अर्थात युवा पीढ़ी से समन्वय स्थापित नहीं कर पाते हैं इसके प्रमुख दो कारण बताये जा सकते हैं- पहला यह कि उम्र बढ़ने से व्यक्तिगत परिवर्तन एवं दूसरा यह कि वर्तमान में आधुनिक समाज अर्थात युवा पीढ़ी का वृध्दों के प्रति व्यवहार| व्यक्ति जैसे-जैसे वृध्द होता जाता है वैसे-वैसे परिवार और समाज में उसका स्थान गिरता जाता है| समय रहते ही हमें इस विषय पर गंभीरता पूर्वक विचार विमर्श कर वृध्दों को उनके अधिकार एवं सम्मान देने का प्रयास करना होगा| अन्यथा आज की वृध्दों की विषमता पूर्ण परिस्थिति भविष्य में बिकट समस्या का रूप धारण कर सकती है| वैसे तो हिंदी साहित्यकारों ने बहुत पहले से ही इस विषय पर अपने साहित्य से विचार विमर्श करने का प्रयास किया है| जिस पर विचार मंथन होना समय की माँग है|

संदर्भ-

1. 'बड़े बुज़ुर्ग', कहानी, प्रियदर्शन संपादक, पृष्ठ- 34
2. 'एक बूढ़े की मौत', कहानी, शीश शर्मा, पृष्ठ- 57-58
3. 'दौड़ उपन्यास', ममता कालिया, पृष्ठ-65
4. 'लालटीन की छत', डॉ. निर्मल वर्मा, उपन्यास, पृष्ठ-35
5. 'गिलिगड्डू', चित्रा मुद्गल, उपन्यास, पृष्ठ-33
6. 'समय सरगम', कृष्णा सोबती, उपन्यास, पृष्ठ-74
7. 'अब वे वासर बीत गए', कविता, मैथिलीशरण गुप्त,

□ □ □

RNI No. RAJBIL/2016/72007

ISSN No. 2456-8996

आज़ादी का अमृत महोत्सव

साहित्य सन्दर्भ

(Peer Reviewed Journal)

(समकालीन साहित्य, संस्कृति एवं समाज से सम्बद्ध शोध पत्रिका)

वर्ष : 6, अंक : 21-22, जनवरी-जून, 2022 (संयुक्तांक)

सम्पादक
प्रो. श्रवणकुमार मीना

उपसम्पादक
डॉ. हरीश कुमार

RNI No. RAJBIL/2016/72007 ISSN No. 2456-8996

साहित्य सन्दर्भ

(Peer Reviewed Journal)

(समकालीन साहित्य, संस्कृति एवं समाज से सम्बद्ध शोध पत्रिका)

वर्ष : 6, अंक : 21-22, जनवरी से जून (संयुक्तांक)

सम्पादक
प्रो. श्रवणकुमार मीना

उपसम्पादक
डॉ. हरीश कुमार

परामर्श मण्डल–
प्रो. विष्णु सर्वदे (हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश)
प्रो. अशोक कुमार (चण्डीगढ़, पंजाब)
प्रो. दत्तात्रेय मुरूमकर (मुम्बई, महाराष्ट्र)
डॉ. धीरज भाई वणकर (अहमदाबाद, गुजरात)
डॉ. सियाराम मीना (कोटा, राजस्थान)

सम्पादकीय सम्पर्क–
ई–286, रामेश्वर नगर,
बासनी प्रथम चरण,
जोधपुर (राज.) 342005
सम्पर्क : +91 9166503385
ई–मेल : harishkumarmeghwal05@gmail.com

'साहित्य सन्दर्भ' में प्रकाशित लेखों/रचनाओं में व्यक्त विचार/तथ्य लेखकों के अपने हैं। सम्पादक/सम्पादन सहयोगी तथा प्रकाशकों से इनकी सहमति होना आवश्यक/अनिवार्य नहीं है और न ही सम्पादक/प्रकाशक/स्वामी इसके लिए उत्तरदायी है। समस्त विवादों के लिए न्यायालय क्षेत्र जोधपुर होगा।

वितरण एवं विज्ञापन प्रबन्धन
डॉ. माया मीना

प्रकाशक, सम्पादक एवं स्वामी डॉ. श्रवणकुमार मीना
सम्पादन– अवैतिनिक, अव्यवसायिक

मुद्रक
जी.एन. ऑफसेट प्रिण्टर्स,
अंसल प्लाजा के पीछे,
स्टेडियम शॉपिंग सेण्टर,
जोधपुर (राज.) 342001

टाईप सेटिंग
क्रिएशन पॉइण्ट,
रामेश्वर नगर, बासनी प्रथम,
जोधपुर

सहयोग राशि (प्रति अंक) : रु 30/–

सहयोग राशि – वार्षिक : 350/–
त्रिवार्षिक : 1000/–

अनुक्रमणिका

1. स्वातन्त्र्योत्तर भारत और परसाई के व्यंग्य
डॉ. ममता देवी 01

2. जसनाथी साहित्य : एक मूल्यांकन
डॉ. भेराराम 05

3. स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में उभरता वृद्ध विमर्श
प्रा. अविनाश कोल्हे 11

4. स्वातन्त्र्योत्तर कथा साहित्य में नारी चेतना
गीतांजली अत्री 16

5. हिन्दी उपन्यासों में अभिव्यक्त देश विभाजन की त्रासदी
रश्मि 21

6. अन्तर्राष्ट्रीय ह्यूमेन ट्रैफिकिंग और किन्नरों की सामाजिक स्थिति को दर्शाता : 'गुलाम मण्डी'
श्वेता शाण्डिल्य 25

7. विभाजन की त्रासदी और मैं बोरिशाइल्ला
अपर्णा वर्मा 29

8. बदलती भारतीय संस्कृति और मधु कांकरिया की कहानियाँ
वर्षा सिखवाल 35

9. भारत-रूस सम्बन्ध : शिखर बैठक के विशेष संदर्भ में
डॉ. चित्रा आचार्य 40

10. महिलाएँ और मानवाधिकार
डॉ. सुरेश गर्ग 45

11. स्वतन्त्रता के बाद नारी की स्थिति एवं भूमिका का ऐतिहासिक अध्ययन
रमीला परिहार 52

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में उभरता वृद्ध विमर्श

प्रा. अविनाश कोल्हे
सहायक प्राध्यापक, (हिन्दी विभाग)
टिकाराम जगन्नाथ महाविद्यालय, खड़की, पुणे

प्रकृति का नियम है कि जिस प्रकार का मौसम होगा उसके अनुरुप निर्मिति होगी। यह प्रकृति नियम हम इंसानों पर भी कुछ हद तक सटीक बैठता है। हम इंसानों में से ही कुछ लोग अपनी सृजनात्मकता के माध्यम से साहित्य का निर्माण करते हैं, जो साहित्यकार कहलाते हैं। यह साहित्यकार भी अपने परिवेश से प्रभावित होते ही हैं साथ ही अपने समकालीन परिस्थितियों से प्रभावित होकर प्रासंगिक साहित्य का सृजन करते हैं। हिन्दुस्तान स्वतन्त्र होने से पूर्व परिस्थितियों में हिन्दी साहित्यकारों ने तत्कालीन परिवेश पर आधारित साहित्य लिखा है। जो अधिकतर एय्यारी, मजदूर, किसान, आजादी, गुलामी, मनोरंजन, तिलस्म, आंदोलन आदि विषयों पर लिखा जा रहा था लेकिन, हिन्दुस्तान में 1947 स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद परिवेश के बदलने से साहित्य लेखन के आयामों में भी परिवर्तन होने लगा। जिसमें स्वतन्त्रता पूर्व लेखन विषयों के अलावा दलित चेतना, आदिवासी चेतना, किसान चेतना, रती चेतना, किन्नर विमर्श, प्रकृति विमर्श, तकनीकी विमर्श, बाल विमर्श तथा वृद्ध विमर्श आदि विषयोंपर खुलकर सृजनात्मक साहित्य लिखा जाने लगा। इसमें से वृद्ध विमर्श एक ऐसा विषय है, जो हर एक इंसान से सम्बन्धित है फिर वह चाहे किसी जाति धर्म का हो, दलित हो, किन्नर हो या फिर आदिवासी, क्योंकि इनमें हर एक को अपने जीवनकाल में समय की गति से वृद्ध होना ही है। यह हमारे जीवन काल की अन्तिम अवस्था मानी जाती है। वास्तव में इस अवस्था में अपना जीवन हँसी खुशी से बिताना चाहिए किन्तु ऐसा होता नहीं। अधिकांश लोग वृद्धावस्था को जीवन की एक अवस्था न मानकर समस्या मानने की भूल कर बैठते हैं, जो बिलकुल गलत है। वृद्धावस्था हमारे जीवन का अन्तिम पड़ाव अवश्य है किन्तु वह कोई अन्तिम क्षण नहीं है। हम इस अवस्था में भी सुखी जीवन बिता सकते हैं। इन्हीं सब बातों पर स्वातन्त्र्योत्तर काल में हिन्दी साहित्यकारों ने अधिक खुबकर बात की है। जैसे कहानीकार सत्यराज द्वारा लिखित कहानी 'अनधिकृत स्वप्न' एक वृद्ध पिता के अहंकार पर भाष्य करती है। कहानी में कुन्ती को उसके पति किशनलाल ने कहा था कि अजय के पास भले ही कोठी, कार इज्जत हो तुम वहाँ मत जाओ पर माँ की ममता ने उसे विवश कर दिया और वह चली जाती है। कुन्ती पर पहला आघात तब होता है, जब अजय उसे स्टेशन लेने नहीं आता और नहीं घर के किसी नौकर को भेजता है। कुन्ती स्वयं ही घर पहुँच जाती है, जहाँ घर के नौकर लोग उनका स्वागत करते हैं। अपने बेटे और बहू को न देखकर दादीजी नौकरों से पूछती है, कि सब लोग कहाँ गए? तब नौकर बतरते हैं कि, साहबा मेम साहब और बच्चों को लेकर पिक्चर देखने गए हैं। थोडी देर में बेटा घर आने पर बहाना बनाते हुए कहता है कि, इंजीनियर साहब के साथ पिक्चर देखने जाना पडा, कुन्ती का बेटा अजय अपनी पत्नी रजनी के साथ माँ

के चरण स्पर्श करता है। साथ ही स्टेशन न पहुँचने पर माफी भी माँगता है। जिस पर कुन्ती बड़े दिल से माफ भी कर देती है। पोता बंटी और पोती वन्दना दादी की गोद में जाकर बैठते हैं और पूछते हैं कि, दादाजी क्यों नहीं आए? तब दादी बच्चों को बताती है कि, उन्हें कुछ काम था वे बाद में आएँगे। दादी कहती है कि, मैंने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की किन्तु वे न माने। दादी अर्थात् कुन्ती अपने पति किशनलाल से कहती है कि, उम्र के इस दौर में मैं इस तरह की जिन्दगी नहीं जी सकूँगी आज क्या नहीं है उसके पास.... कोठी, कार, समाज में इज्जत। सब कुछ तो है उसके पास। मैं तो अपने बेटे के पास जाऊंगी। किशनलाल चाहकर भी कुन्ती को रोक नहीं पाता कुन्ती जाते हुए कहती है— ''हाँ, हाँ मैंने हमेशा अधूरे इंसान जैसा जीवन जिया है। (आज तक इस गृहस्थी में फसकर) संघर्षों में ही समय कटा है मेरा। आज जबकि कुछ सुख–शान्ति से जीवन काटने का समय आया है तो आप मुझे ऐसा करने से रोकना चाहते हैं।''[1]

कुछ दिनों बाद कुन्ती को किशनलाल की बातों में सच्चाई नजर आने लगती है। कुन्ती का विश्वास था कि, उसका बेटा उसकी सेवा करेगा लेकिन समय की तेज धार में कुन्ती का विश्वास बह जाता है। जब डॉक्टर बताते है कि, कुन्ती को छूत का रोग लग गया है। तो बेटा और बहू दोनों का व्यवहार कुन्ती के प्रति बिल्कुल बदल जाता है। इतना ही नहीं तो बहू बच्चों को भी दादी से दूर कर देती है। तब कुन्ती को पता चलता है कि, मेरा पति साथ होता तो यह नहीं होता।

वृद्धावस्था में व्यक्ति अधिकतर अतीत में जीता है, उन्हीं चीजों को याद करता है जो उसने युवावस्था में अनुभव की थी। वह भावनात्मक रूप से कमजोर हो जाता है और उसने युवावस्था में किए हुए कामों की याद करता रहता है। जिस पर लोग भी उनके शारीरिक परिवर्तनों को देखकर वृद्ध की युवावस्था से तुलना करने लगते हैं। भवगतीचरण वर्मा की कहानी 'पियारी' इस बात पर आधारीत दिखाई देती है। यह कहानी वृद्धावस्था में होनेवाले शारीरिक परिवर्तनों को नोट करती है। ''मनोहर वहाँ सामने मोड़ पर बैठी उस बुढ़िया भिखारिन को देखते हो न! न जाने क्यों बिना मेरी इच्छा के मेरी नजर उस पर ठहर जाती है। ऐसा मालूम होता है कि, मैं उसे जानता हूँ यही नहीं वह भी मुझे जानती है। लेकिन वह मुझे पहचानती, शायद इसीलिए कि, मुझमें अधिक परिवर्तन हो गया है। लेकिन उसमें भी बहुत अधिक परिवर्तन हुआ वह भयानक है।''[2] आशय यह है कि, वृद्धावस्था में होने वाले बदलाव शरीर, रंग, रूप को पूरी तरह से बदल देते हैं यहाँ तक कि, उनके मस्तिष्क की संरचना भी बदल जाती है। स्मरण शक्ति काफी प्रभावित होती है। वृद्ध लोग अपने परिचितों को या तो पहचान नहीं पाते या बहुत देर से पहचानते हैं।

प्रभा खेतान द्वारा लिखित 'आम का मौसम' कहानी वृद्ध सेठानी भगवानी बाई के उपर लिखी गयी कहानी है। प्रस्तुत कहानी में वृद्ध भगवानी बाई एक पतिव्रता नारी, मातृवत्सल नारी एवं एक आदर्श नारी के रूप में उभरकर सामने आती है।

प्रस्तुत कहानी की कथावस्तु सेठ रुकमादासजी से शुरु होती है, जो सेठानी भगवानी बाई के पति हैं। गर्मियों में वह बाजार जाते हैं और उनकी पत्नी के लिए आम लेकर आते हैं। वे अपने सर पर पसीना पोंछते हुए घर में प्रवेश करते हैं। पर उस समय उनकी पत्नी अपने पोते के लिए स्वेटर बुनती बैठी होती है पर उसकी बहू मना कर देती है। बहू के मना करने पर भी वह स्वेटर बुनती रहती हैं। यहाँ पर एक बूढ़ी माँ का अपने पोते के लिए प्यार और अपार स्नेह देखने को

मिलता है। सेठ रुकमादासजी बाजार से आम खरीदकर आ गए हैं और वह अपनी बुढी पत्नी भगवानी को खाने के लिए एक बड़ा सा आम देते है पर वह कहती है—

''अपने सभी टाबरों को यह आम पसन्द है, मैं अकेले आम कैसे खा लूँ.... अकेले कैसे? तू और मैं दो जन तो हैं... खाले।''[3]

परन्तु वृद्धा अपने पोतों को छोड़कर आम खाना पसन्द नहीं करती उनके पति कहते हैं कि घरवालों लिए आम लाया हूँ तुम यह आम खा लो किन्तु बुढ़िया नहीं खाती। इस प्रसंग से वृद्धों के दिल में परिवार के बच्चों के प्रति कितना स्नेह होता है। यह दृष्टिगोचर होता है।

'दादी और रिमोट' यह सूर्यबाला जी द्वारा लिखित गाँव से शहर लायी गई एक दादी की कहानी है। दादी गाँव से शहर आने पर वहाँ की चकाचौंध देखकर प्रसन्न हो जाती है। जो एक ऊँची इमारत की सातवीं मंजिल पर रहती है मानो उसे वहाँ पर लटका दिया गया हो।

वृद्धों की समस्याओं को लेकर इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता भी सजग दिखाई देती है। बहुत अधिक कविताएँ आज वृद्ध विमर्श से सम्बोधित प्रकाशित हो रही हैं। हर एक माता-पिता का सपना होता है कि हमारे बच्चे बड़े होकर समाज में इज्जत प्राप्त करें, खुद के पैरों पर खड़े होकर अपना नाम कमाए। इसके साथ ही उनकी और एक इच्छा होती है कि, हमारे बच्चे वृद्धावस्था में हमारी देखभाल भी करें। लेकिन वही बच्चे बड़े होकर अपनी माता-पिता की इज्जत नहीं करते हैं। कवि कुमारेंद्र जी अपनी वृद्धावस्था इस कविता में कहते हैं—

''कल तक जो थाम कर चले थे,
अँगुली हमारी,
आज वो ही उँगली दिखा रहें हैं।''[4]

इस तरह माता-पिता ने अपने बच्चों को पाल-पोसकर बड़ा करते हैं लेकिन वही बच्चे माता-पिता को वृद्धावस्था में आँखें दिखाने लगते हैं। कई बार तो पीटने में भी हिचकिचाते नहीं हैं। वृद्ध माता-पिता के अस्तित्व को ही नकारा जाता है। इसी कारण वृद्धों के जीने का कारण या वजह ही समाप्त हो जाती है। बहुत सारे घरों में वृद्ध लोग एक कोने में हर समय पड़े रहते हैं। जैसे घर की कोई बेकार चीज एक कोने में रख दी हो जिसका परिवार में कोई महत्त्व नहीं है। वृद्धों के प्रति समाज का यही दृष्टिकोण बनता जा रहा है।

चित्रा मुद्‌गल द्वारा लिखित 'गिलिगडु' में सेवानिवृत्त सिविल इंजिनियर बाबू जसवन्तसिंह और रिटायर्ड कर्नल विष्णु नारायण स्वामी इन दोनों की कथा है। दोनों एक दिन सैर करते समय अनायास ही मिल जाते हैं। एक-दूसरे के दु:ख दर्द को बाटते हुए दोनों में घनिष्ट दोस्ती हो जाती है। कर्नल स्वामी अपने आदर्श परिवार की कथा सुनाते हैं लेकिन उनकी जिन्दगी में सभी बातें ठीक इसके विपरित घटित होती हैं। उनके तीन बेटे हैं तीनों ही शादी के बाद उनसे अलग रहते हैं। उनकी प्रिय बहु अनुश्री अपनी डेढ़ साल की जुड़वा बेटियों को छोड़कर अपने नृत्य गुरु के घर जा बैठती है। अपनी पोमियों को देखने के लिए उनसे मिलने के लिए उन्हें चोरी छिपे जाना पड़ता है। कर्नल की सम्पत्ति के लिए उनका मंझला बेटा नारायण उनसे झगड़ा तक करता है। हद तो तब होती है जब नारायण गुस्से में पागल होकर अपने पिताजी को पीट देता है। मार से लहुसुहान कर्नल जी अस्पताल में भर्ती हो जाते है। बोलने के काबील होने के बावजूद

भी वे अपने बेटे के खिलाफ कोई भी किस दर्ज करने से साफ-साफ इंकार करा देते हैं। इस प्रसंग से यह नज़र आता है कि एक पिता अपने खून को पसीने में तपदील कर मेहनत से अपने बच्चों का लालन-पालन करता है, किन्तु वही बच्चे सम्पत्ति के लिए अपने ही माता-पिता के जान पर उतर आते हैं। कर्नल की दर्दनाक मौत के बाद दाहा संस्कार के लिए बडे बेटे और पत्नी बैंगलोर से आते हैं। लेकिन अन्य दोनों बेटे अड़चनों के चलते दाह संस्कार में उपस्थित नहीं हो पाते। बडा बेटा ही दाह संस्कार करता है, किन्तु चौथ की क्रिया करने हेतु उसके पास समय नहीं होता इसीलिए वह वापस बैंगलोर लौट जाता है। बैंगलोर में अपने रिश्तदारों के साथ ही वहाँ तेहरवीं का कार्यक्रम सम्पन्न करता है। इसपर कर्नल की पड़ोसन मिसेज श्रीवास्तव कहती है, ''ऐसी कसाई औलादों से तो आदमी निपुता भला। हमें इस बात का कोई गम नहीं कि, हमारी कोई अपनी औलाद नहीं।''[5]

वहाँ से लोटकर जसवंत सिंह नौकरानी सुनगुनिया के नाम पर अपने जीवन की वसीयत बदल ने का निश्चय करते हैं और कानपुर वापस जाकर अपने जीवन का नया पड़ाव अपनी गिलिगड्डु कात्याथिनी कुमुदनी के साथ बिताना चाहते हैं। उनके मरणोपरान्त उनके बेटों की आने की सम्भावना नहीं है। इसलिए वे अपनी वसीयत में यह भी जोड़ देते हैं कि सुनगुनियें को लड़के रामरतन अभिषेक आसरे ही उनकी कपाल क्रिया करें। उसे ही वह अपने दाह संस्कार का अधिकार देते हैं। बाबू जसवंतसिंह आपने बेटे के पास तिरस्कृत होकर रहने के बजाय अपनी बुद्धि युक्ति एवं सम्पत्ति के बल पर अपने इच्छानुसार जहाँ आदर, सम्मान, सेवा सुश्रुषा और ममत्व मिलता है वहाँ चले जाते हैं।

'दौड़' उपन्यास के माध्यम से ममता कालिया जी ने युवा वर्ग की मानसिकता और संवेदनशून्यता की ओर संकेत किया है। उपभोगतावादी संस्कृति के बच्चे इतने दौड़ रहे हैं कि उनके पास अपने रिश्तों को निभाने के लिए भी समय नहीं है। दौड़ उपन्यास के रेखा और राकेश बच्चों के नोकरी के लिए जाने के बाद एकदम अकेले हो जाते हैं। अकेलेपन और उदासी के कारण दोनों काफी व्यथित होते हैं। पवन अपनी पसंद के अनुसार स्टैला नामकी लड़की से विवाह करता है। जो कमाऊ और कैरियरिस्ट युवती है। विवाह के कुछ दिनों बाद ही वे काम के सिलसिले से अलग-अलग शहरों में रहते हैं। दोनों का दाम्पत्य जीवन इण्टरनेट, ई-मेल, सर्फिंग में बीतता जाता है। राकेश और रेखा दोनों एक-दूसरे का सहारा बनकर इस भ्रम में रहते हैं कि बेटे कभी कभार वापस आकर उनका सहारा बनेंगे। वही दो दिन की जिंदगी वे जी भरकर जिएँगे। पीड़ा, ग्लानि, भय, निराशा, अकेलेपन को दूर करने के लिए व्यस्त रहने का प्रयास करते हैं जैसे घूमने जाना, गप्पे लड़ाना, रामचरित मानस पढ़ना आदि। परन्तु सोनी साहब की मृत्यु और सघन का ताईवान के स्थानिक राजनीति में सक्रिय हो जाने से दोनों पूरी तरह से हील जाते हैं। पिताजी जब सघन को वापस बुलाते हैं, तो यह अपने पिताजी से पैसों का हिसाब माँगते हुए कहता है- ''अपने इतने बरसों में क्या किया ? दोनों बच्चों का खर्च आपके सिर से उठ गया। घूमने आप जाते नहीं, पिक्चर आप देखने नहीं, दारु आप पीते नहीं फिर आपके पैसे का क्या हुआँ।''[6] इस प्रकार अपने ही पिता को कटघरे में खड़ाकर सवाल पूछता है। एक बूढ़ा निर्धन बाप इसके क्या उत्तर दे सकता था। आखिरकार सघन ताईवान में ही रहने का फैसला कर लेता है तो यहां पर माता-पिता उसकी राह देखते रह जाते हैं। बेटे की चिंता और विरह की भावना की प्रचूरता ही इस उपन्यास का समापन है।

इस प्रकार मैंने स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य के परिप्रेक्ष्य से वृद्धावस्था पर मेरी जानकारी अनुसार संक्षिप्त विचार-विमर्श करने का छोटासा प्रयत्न किया है। निष्कर्षः वृद्धावस्था पर हम कह सकते हैं कि वृद्धावस्था कोई

 ISSN No. 2456-8996

समस्या नहीं है वह तो एक अवस्था है जिससे कालचक्र के अनुसार हर एक व्यक्ति गुजरना ही है। जरुरत है हमें इस अवस्था की मानसिकता को समझने की। जिस प्रकार माता–पिता अपने बच्चों का शिशुवस्था में खयाल रखते हैं। तो उन बच्चों को भी बड़े होने के बाद जब उनके माता–पिता वृद्ध होते हैं तो उनका खयाल रखना आवश्यक है। इन वृद्धों का खयाल रखते समय युवा पीढ़ी को उनकी मानसिकता को भी ध्यान में रखना होगा, क्योंकि कहते है नापचपन में बचपन होता है। ''हम युवा पीढ़ी के लोग यदि वृद्धों का खयाल नहीं रखेंगे तो आनेवाली पीढ़ी भी हम से सरोकार नहीं रखेगी क्योंकि हम ''जो बोएँगे वही तो पाएँगे।'' इसी उम्मीद से सकता हूँ लेकिन जाते–जाते मन की बात–

''कुर्सी पर बैठकर भरी जवानी में बुढ़ापे की बात करता हूँ,
कही वर्तमान भविष्य को खा न जाए,
इसलिए खुद ही खुद को टोकता हूँ।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची—

1. 'अनाधिकृत स्वप्न' – सत्यराज, वृद्धावस्था की कहानियाँ। सं – गिरिराजशरण, पृ.117
2. 'प्रतिनिधि कहानियाँ' – भगवतीचरण वर्मा राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1988, पृ.67–68
3. 'आम का मौसम' – पुष्पपाल सिंह, अभिरुचि प्रकाशन दिल्ली, पृ.171
4. Kavira Sangrah. blogspot. in2009/03/blog-post08 html.
5. 'गिलिगडु उपन्यास – चित्रा मुद्गल, पृ.63
6. दौड़ उपन्यास – ममता कालिया, पृ.85

ISSN 2319-6785
वर्ष 31 (अंक 2)
जून - जुलाई 2019

द्वैमासिक

राष्ट्रवाणी

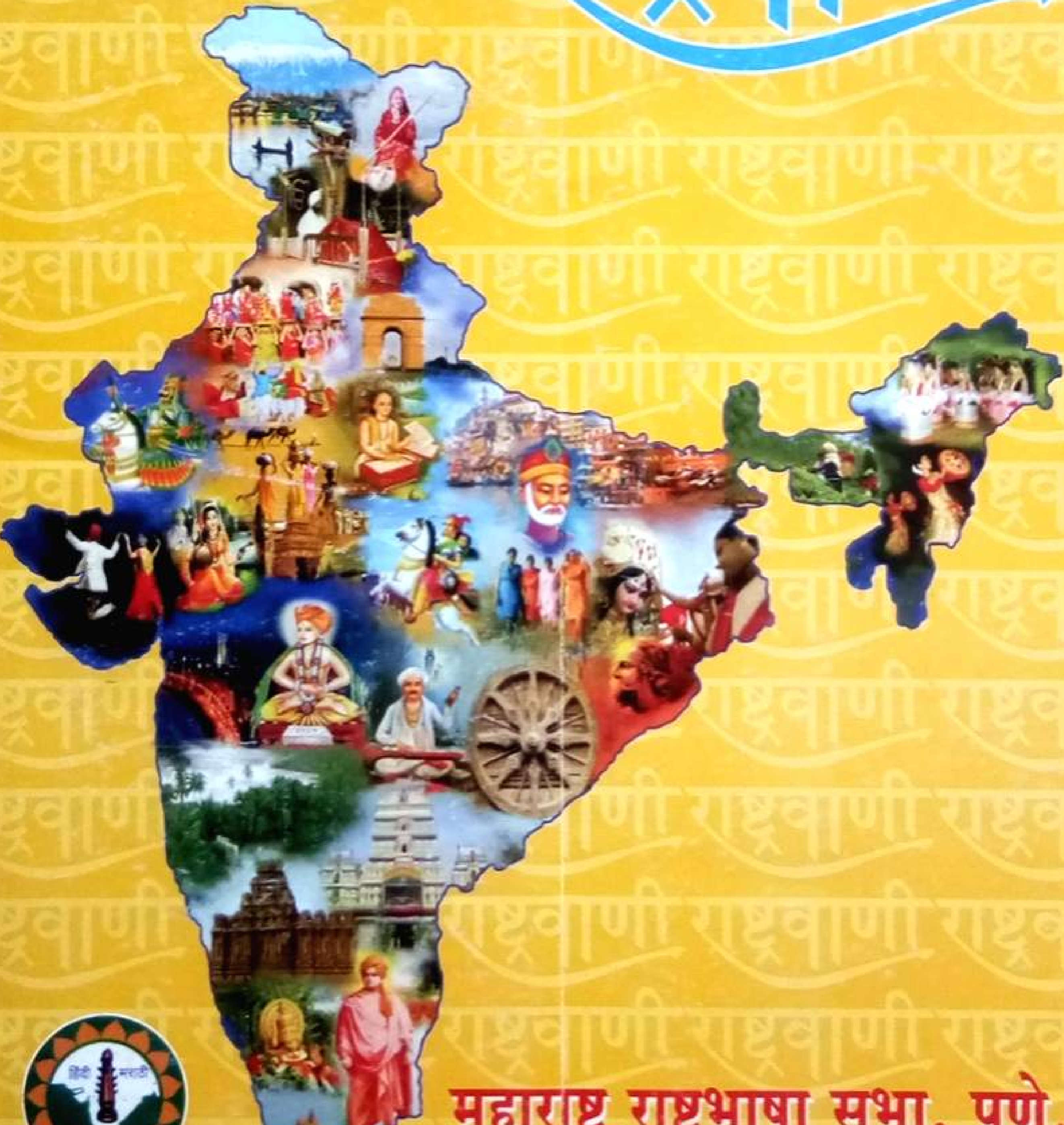

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे.

हिंदी पढो, आगे बढो और भारत जोड़ो.

केंद्रीय हिंदी निदेशालय (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार) नई दिल्ली की आर्थिक सहायता से प्रकाशित राष्ट्रीय स्तर की हिंदी साहित्यिक-समीक्षात्मक-शोध पत्रिका

ISSN 2319-6785 Rashtravani

द्वैमासिक

राष्ट्रवाणी

हिंदी साहित्यिक-समीक्षात्मक-शोध पत्रिका

वर्ष 31 (अंक 2)

जून - जुलाई 2019

-: संपादक मंडल :-

पूर्व अध्यक्ष - प्राचार्य सु. मो. शाह

कार्याध्यक्ष - डॉ. वीणा मनचंदा

-: सहायक :-

डॉ. नीला बोर्वणकर **डॉ. ऋचा शर्मा**

डॉ. निशा ढवळे

राष्ट्रवाणी सदस्यता शुल्क :-

मनीऑर्डर/ड्राफ्ट 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे' के नाम से भेजिए।

प्रति अंक : रु. 50/- **पंचवार्षिक** : रु. 1000/-

द्वैवार्षिक : रु. 500/- **दस वर्ष के लिए** : रु. 1500/-

मनीऑर्डर/ड्राफ्ट भेजने का पता -

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे -

राष्ट्रभाषा भवन, 387 नारायण पेठ, पुणे - 411030

दूरभाष : 020 - 24458947 / 24454268

संलग्न पत्र में शुल्क का प्रकार,

अपना पूरा नाम और पिनकोड सहित पूरा पता, दूरभाष क्रमांक लिखिए।

प्रबंधक :- सौ. सुनेत्रा गोंदकर

प्रकाशक, मुद्रक :- शे. आ. जगताप, सचिव,

मुद्रणस्थान :- महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, मुद्रणालय

387, नारायण पेठ, पुणे - 411030

राष्ट्रवाणी साहित्यिक-समीक्षात्मक पत्रिका है। यह जरुरी नहीं कि लेखकों के विचारों से संपादक सहमत हो। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का स्वामित्व-अधिकार पत्रिका का है।

अनुक्रमणिका

जून - जुलाई 2019

1. अपनी ओर से - गांधीमय,हिंदी सेवी प्राचार्य डॉ. विश्वास पाटील	- प्रा. सु. मो. शाह	2
2. शिक्षक बनकर क्या भूखे मरना है ?	-डॉ. सदानंद भोसले	7
3. हिंदी कहानी में 'दलित विमर्श'	-डॉ. राजेंद्र खैरनार	9
4. शब्द-सत्ता का ग्लोबल जनतंत्र : मीडिया	-डॉ. विजयकुमार रोडे	14
5. राजेश जोशी के अंतिम दशक की कविता में व्यंग्य	-डॉ. राजेश रसाळ	19
6. राष्ट्रभाषा व प्रांतीय भाषाओं के विकास में बाधक : अंग्रेजी	-डॉ. प्रभु चौधरी	22
7. अनामिका के साहित्य में शिक्षा की भूमिका	-श्री सिद्धेश्वर कोणदे	25
8. साठोत्तरी हिंदी नाटकों में प्रयोगशीलता	-डॉ. मीनाक्षी कुरणे	27
9. 'कापूसकाळ के जगू': भारतीय किसान का प्रातिनिधिक चरित्र	-डॉ. एकनाथ पाटील	31
10. पद्माकर की भाषा और ब्रजभाषा के विविध स्तर	-डॉ. अमित शुक्ल	35
11. सांप्रदायिक सद्भाव और हिंदी ग़ज़ल	-डॉ. सूरज चौगुले	41
12. गिरिराज किशोर कृत 'ढाई घर' उपन्यास में चित्रित स्त्री...	-श्री अविनाश कोल्हे	44
13. अमावस्या से पूर्णिमा तक सफर करती हिंदी	-श्री रितेंद्र अग्रवाल	47

गिरिराज किशोर कृत 'ढाई घर' उपन्यास में चित्रित स्त्री विमर्श

श्री अविनाश मारूती कोल्हे
शोध छात्र, हिंदी विभाग, पुणे विश्वविद्यालय,
पुणे - 411007. (मोबा. 9422327212)

स्त्री विमर्श हिंदी साहित्य का चर्चित विषय रहा है। वस्तुतः नारी मुक्ति से संबद्ध रचा गया साहित्य स्त्री विमर्श कहलाता है। स्त्री विमर्श एक ऐसा आंदोलन है, जो नारी को उसके अधिकारों के प्रति सचेत करते हुए उसके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक क्षेत्रों में संपूर्ण स्वतंत्रता की माँग करता है। जीवन में स्त्री पुरुष की भूमिका एक-दूसरे के लिए पूरक होनी चाहिए। स्त्री विमर्श की बात मात्र स्त्री-पुरुष संतुलन की नहीं बल्कि समाज और परिवार की व्यवस्था में बदलाव की है। मूलतः स्त्री विमर्श की बात मात्र नारी की अस्मिता की खोज करते हुए उसे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक स्वतंत्रता के साथ स्त्री को खुला आकाश देकर उसे मानव के रूप में जीने लायक वातावरण बनाकर नारी के सशक्तीकरण पर बल देती है। वर्तमान उपन्यास साहित्य में स्त्री की त्रासदी और विडंबना, उसकी शोषित स्थिति, आर्थिक सामाजिक पराधीनता, सामंती मूल्य, रूढ़िग्रस्त मान्यताओं और धारणाओं से जुड़े प्रश्नों को खुले, तीखे एवं साहसपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रस्तुत गिरिराज किशोर द्वारा लिखित 'ढाई घर' उपन्यास में गिरिराज किशोर जी ने मंझली चाची, बड़ी जेठानी रूपा, कला, छोटी चाची, रानी, सोना, सीमा मनसुखराय की पत्नी, रेहेमतुल्ला की पत्नी आदि स्त्री पात्रों के माध्यम से स्त्री विमर्श के विविध आयामों पर प्रकाश डाला है। किशोर जी ने उपन्यास में कृष्ण राय की पत्नी, जिसे मंझली चाची कहा गया है, के माध्यम से एक स्त्री को अपने स्त्रीत्व को सिद्ध करते हुए चित्रित किया है। कृष्ण राय और मंझली चाची की शादी को काफी दिन होने के बाद भी उनके बच्चा नहीं होता, जिसके कारण वे एक अंग्रेज मेम से मिलने जाते हैं, तो मेम कृष्ण राय से कहती है कि आप अपनी जाँच करा लें। आपकी पत्नी में कोई दोष नहीं है। इस बात पर कृष्ण राय अपनी पत्नी से काफी उखड़े-उखड़े रहने लगते हैं। चाची खाना तक बंद करती है जिसके कारण वह दिन-ब-दिन कमजोर होती जाती है। एक दिन चाची उनके पाँव पकड़ती है और रोते हुए कहती है कि मुझे बताइए मैं कहाँ जाऊँ? क्या करूँ? मैं तो यहाँ आपके सहारे आई थी। आप ही मुँह फेर लेंगे तो मैं कहाँ जाऊँगी। मेरा कौन है?

दरिया में बहते तिनके को भी आस होती है कभी तो किनारे लगेगा, पर मेरा तो उतना भी सहारा नहीं बचा मुझसे नफरत न कीजिए। मुझे मार डालिए। आपकी नफरत मुझे जलाए डाल रही है और मेरा प्रेम भी मुझे खाए जा रहा है।''[1] ''कृष्णा राय उससे कहते हैं कि 'तुम कभी माँ नहीं बन सकती। चाहो तो पतिव्रत खोकर कोशिश कर लो।' जिसके कारण मंझली चाची पत्थर सी-बनती जाती है। इसी कारण उनकी मौत हो जाती है। इस प्रसंग से निस्संतान स्त्री की त्रासदी को व्यक्त

किया गया है ।

सोना यह भास्कर राय की बेटी है जो विवाह के बाद काफी संघर्षमय जीवन का सामना करती है और अपना अस्तित्व स्थापित करती है जिसके लिए उसे राय परिवार जैसे सामंती परिवार की परंपराएँ तोड़नी पड़ती हैं। विवाह के बाद उसका पति उसे छोड़ देता है, तो वह हिम्मत न हारते हुए आधुनिक स्त्री की तरह नौकरी करने का फैसला करती है जो परिवार में से उसके भाई रघुवर छोड़कर किसी को रास नहीं आता । सोना को उसके दादा जी छोटे राय (राघव राय) द्वारा टोके जाने पर वह कहती है, ''छोटे दादा मैं इस लुप्तप्राय राय खानदान की बेटी नहीं हूँ एक स्वतंत्र व्यक्तित्व हूँ, मेरे भविष्य के बारे में आप लोग कहाँ तक निर्णय लेते रहेंगे, एक बार आप ले चुके हैं, वह गलत साबित हुआ, अब मुझे खुद लेने दीजिए । मैं अपने व्यक्तित्व को अपने पिता या पति के नाम पर मिट्टी में नहीं मिलाना चाहती ।''[2] इस पात्र के माध्यम से लेखक ने एक संघर्षकारी भारतीय नारी को पाठकों के सामने रखा है जो परिस्थितियों से न घबराते हुए उन्हें स्वीकार करती है और अपनी जिंदगी गुजारती है ।

इस उपन्यास में एक स्त्री पात्र है कला जो भास्कर राय की दूसरी पत्नी है । वह शादी के बाद खुश तो है लेकिन एक सामंती परिवार के रिवाजों में दब-सी जाती है, एक दिन उससे मिलने के लिए उसके भाई जगन बाबू आते हैं तो वे कला से पूछते हैं कि तू खुश है या नहीं? तो कला कहती है, ''खुश तो बहुत हूँ पर आजाद नहीं। आजाद होती तो मैं भी आपके साथ चलती, मैं भी गांधी जी के दर्शन करती । वैसे तो यहाँ किसी चीज की कमी नहीं । पर्दा है, बंधन है, छुआछूत है, सब बहुत मानते हैं पर अपनी शर्तों पर । आपने तो देखा है वहाँ मैं लड़की की तरह रहती थी। यहाँ बहू क्या हुई पिंजड़े की मैना हो गई । जब आपकी आजादी आ जाएगी तो क्या हम औरतों के ये पिंजड़े भी खुल जाएँगे।''[3] कला के इन सवालों से सुखी या सामंत परिवार की नारियों की त्रासदी पर भाष्य किया गया है जो देश आजाद होने के बाद खुद को आजाद महसूस नहीं करतीं ।

रूपा यह पात्र प्रस्तुत उपन्यास में भास्कर राय की पहली पत्नी के रूप में चित्रित किया गया है । उनकी शादी तो बड़े शानो शौकत से होती है, लेकिन न होने के बराबर। शादी की रात ही रूपा को बेपनाह खाँसी शुरू होती है, जिसके कारण भास्कर घबरा जाता है । घरवाले चिंतित होते हैं, डॉक्टर को बुलाना चाहते हैं, लेकिन रूपा मना कर देती है । वह किसी को अपने आपको छुने तक नहीं देती । उसका भाई उसे अपने मायके ले जाता है, जहाँ पर कुछ दिन बाद ही उसकी मौत हो जाती है । वह अपनी माँ से कहती थी कि, ''वे मुझे छुना चाहते थे, प्यार करना चाहते थे मैंने उन्हें रोक दिया । उन्हें बुला दो मैं उनके चरण छूकर माफी माँगना चाहती हूँ ।''[4] अर्थात वह यही खेद करती रही कि, वह अपना धर्म नहीं निभा पाई ।

सारंगा भास्कर राय की तीसरी पत्नी है, जो अपने ही परिवार में हक और सम्मान के लिए लड़ती दिखाई देती है । भास्कर की दूसरी पत्नी के बच्चे रघुबर और सोना उसे माँ के रूप में स्वीकार नहीं कर पाते, जिसके कारण उनमें दूरियाँ बढ़ती जाती हैं । सोना की तो उससे बात ही नहीं बनती थी । बच्चे उसका कहा नहीं मानते

थे। जिससे नाराज होकर हमेशा कहा-सुनी होती थी। वह भास्कर से कहती है "मैं तुम्हारे, बच्चों और तुम्हारे घरवालों की खुशी का ध्यान रखूँगी तो मेरी खुशी का ध्यान आप सबको भी रखना होगा। नहीं तो मुझे लगेगा कि मैं इस घर की बाँदी हूँ। मैं इस घर की बहू बनकर आई हूँ। दोनों में बहुत फर्क है। हवेली के जितने क्षेत्र में मैं रहती हूँ उसपर मुझे अपना अधिकार मिलना चाहिए। मुझपर विश्वास होना चाहिए, चाहे बच्चे हो या घर... जैसे मैं घर में आग नहीं लगाऊँगी ऐसे ही बच्चों को भी जहर देकर मार नहीं डालूँगी।"[5] इस प्रकार वह अपने हक और सम्मान के लिए लड़ती है।

बड़े राय की बेटी रानी की शादी बड़े शान से होती है, काफी दहेज भी दिया जाता है फिर भी उसके ससुर बड़े राय से उनका पसंदीदा घोड़ा 'जॉर्ज' माँग लेते हैं, जो काफी और मशहूर था जिसके जाने के कारण सभी आहत होते हैं। एक दिन काला उसका हाल-चाल जानने के लिए रानी से मिलता है, तो वह फूट-फूटकर रो पड़ती है। वह कहती है कि, "उसने अपने ससुर से कहा था कि 'जॉर्ज' को न बेचें वह पिता जी की शान है, आप उसे पिता जी को लौटा दें। मैं उनसे मुँह माँगी कीमत दिलवा दूँगी।"[6] लेकिन उसकी कोई नहीं सुनता उलटा उससे कहा जाता है, कि वह अपने मायके से बाहर आए। रानी अपनी असमर्थता दर्शाते हुए कहती है कि "मैं कुछ नहीं कर पाई 'जॉर्ज' मेरे देखते-देखते चला गया। मैं खिड़की से बेबस झाँकती रह गई। उसकी आँखों से आँसू टपक रहे थे। वह मेरा तीसरा बेटा हो गया था राजू, मौजू की तरह।"[7] इस प्रसंग से लेखक ने भारतीय नारी की असमर्थता को पाठकों के सामने रखा है।

इस प्रकार से गिरिराज किशोर द्वारा लिखित 'ढाई घर' उपन्यास में आत्मनिर्भर जिजीविषापूर्ण, परंपरागत मूल्यों को स्वीकारनेवाली असहाय, पीड़ित, लाचार, विद्रोही, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को व्यक्त करने वाली, हक के लिए तथा सम्मान के लिए लड़ने वाली विभिन्न स्त्री पात्रों का चित्रण है। ये पात्र अपनी चारित्रिक विशेषताओं के बल पर पति-पत्नी के आपसी झगड़े, पारिवारिक मनमुटाव, विवाहबाह्य संबंध, स्त्री-पुरुष समानता, प्रेम भावना, विधवा समस्या, पर्दाप्रथा जैसे विभिन्न स्त्री विमर्श के आयामों को चित्रित करते हैं।

संदर्भ:

1.2.3 : ढाई घर : लेखक गिरिराज किशोर प्रकाशक; राजपाल अॅण्ड सन्स, दिल्ली संस्करण; (2011) पृ.क्र. 78

4. वही, पृ. क्र. 373
5. वही, पृ. क्र. 211
6. वही, पृ. क्र. 189
7. वही, पृ. क्र. 249

****

हिंदी भाषा और साहित्य
विविध आयाम

डॉ. बी.एल. धनदे

ISBN : 978-93-95288-14-9
मूल्य : पाँच सौ रुपये मात्र

पुस्तक : हिंदी भाषा और साहित्य : विविध आयाम
लेखक : डॉ. बी.एल. धनदे
प्रकाशक : **वान्या पब्लिकेशंस**
ए/2122 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता,
कानपुर - 208 021
Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com
info@vanyapublications.com
Website : www.vanyapublications.com
Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण : प्रथम, 2022
मूल्य : 500/-
शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर
मुख्य पृष्ठ : गौरव शुक्ल, कानपुर
मुद्रण : सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर

अनुक्रम

- वैश्विक परिदृश्य में हिंदी : संदर्भ विश्व हिंदी सम्मेलन
- हिंदी का निरंतर बढ़ता कारवां और गढ़ते मील के पत्थर
- 21वीं शताब्दी में हिंदी का वैश्विक परिदृश्य
- मीडिया तकनीकी के रथ पर सवार हिंदी का वैश्विक फलक : विविध आयाम
- 21 वीं सदी की पत्रकारिता : जवाबदेही और विमर्श
- राष्ट्रीय एकात्मकता के संवाहक के रूप में हिन्दी भाषा
- 21वीं सदी में हिंदी पत्रकारिता
- हिन्दी : ग्राह्यता की सीमा व स्वाभाविकता
- प्रयोजनमूलक हिंदी
- 21वीं सदी में हिंदी की अंतरराष्ट्रीयता में रोजगार की संभावनाएँ
- हिंदी के उत्थान में अहिंदी भाषिकों की भूमिका
- 21वीं शताब्दी में हिंदी भाषा का विकास व शिक्षण संबंधी चुनौतियाँ
- समकालीन हिंदी कविताओं में ग्राम्य चेतना
- 21वीं सदी में सामाजिक परिवर्तन का आह्वान करती असगर वजाहत की कहानियाँ
- 21वीं शताब्दी में नारी विमर्श : गीतांजलि श्री के उपन्यासों के विशेष संदर्भ में
- 21वीं सदी के दलित साहित्य में सूरजपाल की आत्मकथाओं का महत्त्व
- रमणिका गुप्ता के साहित्य में आदिवासी विमर्श एवं उसकी प्रासंगिकता
- 21वीं शताब्दी में बाल विमर्श : एकांत श्रीवास्तव की कविताओं के परिप्रेक्ष्य में
- सैनिक जीवन : हिन्दी सिनेमा की दृष्टि
- संजीव के कहानी साहित्य का आधुनिक चिंतन
- कुमाउनी लिखित शिष्ट साहित्य में राष्ट्रीय चेतना
- बाल–साहित्य की प्रासंगिकता

अनुक्रम

1. वैश्विक परिदृश्य में हिंदी : संदर्भ विश्व हिंदी सम्मेलन
डॉ. बी.एल. धनदे 15
2. हिंदी का निरंतर बढ़ता कारवां और गढ़ते मील के पत्थर
डॉ. बंशीधर तातेड़ 23
3. 21वीं शताब्दी में हिंदी का वैश्विक परिदृश्य
डॉ. हेमन्त सिंह कंवर 32
4. मीडिया तकनीकी के रथ पर सवार हिंदी का वैश्विक फलक : विविध आयाम
डॉ. विदुषी शर्मा (वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर) 40
5. 21 वीं सदी की पत्रकारिता : जवाबदेही और विमर्श
डॉ. ललित कुमार 56
6. राष्ट्रीय एकात्मकता के संवाहक के रूप में हिन्दी भाषा
डॉ. कृष्ण बलदेव सिंह राठौड़ 62
7. 21वीं सदी में हिंदी पत्रकारिता
प्रोफेसर नवेंदु बंसल 65
8. हिन्दी : ग्राह्यता की सीमा व स्वाभाविकता
मुकेश जैन 72
9. प्रयोजनमूलक हिंदी
डॉ. श्रीमती धनेश्वरी दुबे 79
10. 21वीं सदी में हिंदी की अंतरराष्ट्रीयता में रोजगार की संभावनाएँ
डॉ. अंचला कुमारी 86
11. हिंदी के उत्थान में अहिंदी भाषिकों की भूमिका
प्रो. अविनाश मारुती कोल्हे 90
12. 21वीं शताब्दी में हिंदी भाषा का विकास व शिक्षण संबंधी चुनौतियाँ
डॉ. अश्वनी 93
13. समकालीन हिंदी कविताओं में ग्राम्य चेतना
डॉ. बंशीलाल 103

11

हिंदी के उत्थान में अहिंदी भाषिकों की भूमिका

प्रा. अविनाश मारुती कोल्हे

हमारे भारत देश में धार्मिक विविधता के समान ही भाषिक विविधता भी देखी जाती है या यह भी कहा जा सकता है कि हमारे देश में जो प्रादेशिंक रचना हुई है वह भी भाषा के आधार पर हुई है। 1947 के बाद राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के रूप में किसी एक भाषा का चयन होना आवश्यक था। जिसके फलस्वरूप 14 सिंतबर 1949 के दिन संविधान सभा ने एक मत से निर्णय लिया कि हिंदी ही भारत की राजभाषा होगी और देवनागरी इसकी लिपि। इसी कारण तो 14 सिंतबर का दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। आजादी के पहले और बाद भी हिंदी भाषिकों ने तो हिंदी भाषा के उत्थान में अपनी भूमिका अदा की है लेकिन अनेकानेक अन्य भाषाई लोग थे जिन्होंने हिंदी भाषा में काम कर हिंदी के उत्थान में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। धार्मिक आंदोलन, शिक्षा के प्रचार–प्रसार, सामाजिक कार्य व्यापारिक गतिविधियां, राजनैतिक कार्य में शामिल अनेक गुजराती, मराठी, तमिल, बंगाली, भाषिक लोगों ने हिंदी को जी जान से चाहा और उसकी सेवा भी की ताकि वह जल्द से जल्द राष्ट्रभाषा के पद पर विराजमान हो सके। जैसे स्वतंत्रता आंदोलन के समय देश के अहिंदी भाषिक क्षेत्र से अलग–अलग पत्र–पत्रिकाएँ निकलती थी जिनके हिंदी परिशिष्ट भी होते थे। महाराष्ट्र में मराठी भाषी केशव वामा पेठे ने 1993 में 'राष्ट्रभाषा किंवा सर्व हिंदुस्थानची एक भाषा करणे' नामक पुस्तक पुणे से प्रकाशित की थी जिसमें उन्होंने हिंदी को सर्वस्वीकृत रूप से राष्ट्रभाषा बनाने पर जोर दिया था। इसी तरह अनेक महानुभावों का सार्थक योगदान हिंदी को राष्ट्रीय भाषा का सम्मान, स्वीकृति, प्रचार–प्रसार और लोकप्रिय बनाने में रहा है।

महात्मा गांधी जी दक्षिण अफ्रिका से भारत आने के बाद किसान आंदोलन में सहभागी हुए थे। गुजराती भाषिक और अंग्रेजी के अच्छे जानकार होने के बाद भी किसान आंदोलन का नेतृत्व हिंदी में किया था। आगे चलकर उन्होंने 'हरिजन' नामक पत्र हिंदी में निकालना शुरू किया था। गांधी जी की प्रेरणा से ही संपूर्ण भारत में हिंदी का प्रचार–प्रसार करनेवाली संस्थाओं की स्थापना हुई।

हिंदी के महत्व को समझते हुए देश को एकसुत्र में बांधने के लिए स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने स्वयं गुजराती भाषिक होने के बावजूद भी अपने सब से प्रमुख ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की रचना हिंदी में की। संस्कृत भाषा के विद्वान होने के बाद भी उन्होंने हिंदी भाषा को ही आर्यसमाज के विस्तार में प्रचार–प्रसार की भाषा बनाया। चारों वेदों का भाष्य हिंदी में लिखा। यह उनके कार्य का परिचय देता है।

हिंदी भाषा को देश की भाषा बनाने में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक माननीय माधव सदाशिव गोलवलकर का नाम सर्वोच्च है। गोलवलकर जी स्वयं मराठी भाषिक थे विज्ञान की शिक्षा उन्होंने अंग्रेजी भाषा से ली किंतु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक के रूप में उन्होंने अभिव्यक्ति का माध्यम हिंदी को बनाया। उन्होंने तैंतीस वर्षो के दीर्घ कालखंड में छियासठ बार भारतमाता की परिक्रमा की थी जिसमें व्याख्यान का माध्यम हिंदी भाषा को ही बनाया। अहिंदी भाषिक क्षेत्रों में हिंदी शिक्षण के विस्तार में श्री गोलवलकर जी सदा समर्थक रहे।

हिंदी पत्रकारिता की दुनिया में जिन गैर हिंदी भाषी पत्रकारों का महत्वपूर्ण योगदान है उनमें बाबुराव विष्णु पराड़कर का नाम बड़ी श्रद्धा के साथ लिया जाता है। पराड़कर जी ने अपने मामा द्वारा लिखित पुस्तक देशेर कथा का हिंदी में अनुवाद किया था जिसके कारण वे चर्चा में आए। उन्होंने कलकत्ता से 'भारतमित्र' नामक हिंदी पत्र निकाला जिसके वे संपादक रहें। आगे चलकर पराडकर जी के सहयोग से वाराणसी से 'आज' दैनिक प्रकाशित हुआ जिसके संपादक के रूप में उन्होंने हिंदी पत्रकारिता को भाषाई अखबार से उपर उठाकर राष्ट्रीय पहचान दी। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता की भाषा का गठन किया इतना ही नहीं हिंदी के अनेक शब्द स्वयं गढ़े और अंग्रेजी का विकल्प प्रस्तुत किया।

मुंबई में भारतीय विद्याभवन के संस्थापक और कुलपति स्व. कन्हैयालाल मणिकलाल मुंशी का हिंदी प्रेम सभी जानते हैं। उन्होंने मुंबई में 'नवनीत' का प्रकाशन शुरू किया था। संस्कृति और साहित्य के प्रचार–प्रसार में इस पत्रिका ने अपनी अहम भूमिका निभाई है। गुजराती भाषिक होने के बावजूद भी मुंशी जी ने हिंदी भाषा के प्रति अपनी आत्मियता दिखाई है। इन्होंने महाभारत के पात्रों योगेश्वर, श्रीकृष्ण, कुंती, युधिष्ठिर, पितामह भीष्म द्रौपदी आदि का जीवनचरित्र लिखकर मानो हिंदी की सेवा ही की है। वाल्मीकि रामायण का हिंदी अनुवाद इन्हीं की योजना थी।

वर्तमान समय में देश भर में अनेक गैर हिंदी भाषी हिंदी की सेवा में जुटे हुए हैं। ग्वालियर निवासी श्रीधर गोविंद पराडकर जी का योगदान प्रशंसनीय है। उन्होंने लगभग दो दर्जन पुस्तकों की रचना हिंदी में कर हिंदी के प्रति अपना प्रेम

प्रदर्शित किया है। इनकी प्रमुख अप्रतिम कृति 'द्रष्टा भगतसिंह', 'राष्ट्रसंत तुकडोजी', 'मध्य भारत की संघ गाथा' आदि महत्वपूर्ण है। इनका यह सारा रचना संसार हिंदी में है जबकि उनकी मातृभाषा नहीं है। इनके अलावा मराठी से हिंदी में अनुवाद करनेवाले और हिंदी भाषा में मौलिक सृजन करनेवाले दामोदर खडसे जी का योगदान भी महत्वपूर्ण है। इन्होंने मराठी भाषा में प्रसिद्ध बलुतं, उपरा, जैसी लगभग दो दर्जन पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद किया है। तो हिंदी भाषा में 'अब वहाँ घोसले है', आखिर वह एक नदी थी, इस जंगल में, काला सूरज, जीना चाहता है समय मेरा, भगदड, सन्नाटे में रोशनी आदि रचनाएँ उनके कार्य की साक्ष देती है।

इन महानुभावों के अतिरिक्त ऐसे बहुत से विद्वान हुए हैं जिन्होंने हिंदी भाषा की सेवा की है। विनोबा भावे जी ने वर्धा में महात्मा गांधी जी की प्रेरणा से हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना की नींव रखी। बंगाल में राजाराम मोहन राय, केशवचंद्र जी ने अपने समय में हिंदी के उत्थान में अतुलनीय योगदान दिया। चेन्नई से प्रकाशित 'चंदामामा' के हिंदी संस्करण के संपादक डा. बालशौरी रेड्डी आजीवन हिंदी की सेवा करते रहे। तमिलनाडू में विरोध होने के बावजूद भी उन्होंने हिंदी पत्रिका का न केवल संपादन जारी रखा बल्कि हिंदी की शुद्धता की ओर ध्यान दिया। पंजाबी भाषी डॉ. नरेंद्र कोहली ने साहित्य सृजन के लिए हिंदी को अपनाया। अपने व्यंग्य लेखन से उन्होंने अपना योगदान दिया।

इनके अलावा हिंदी भाषा को प्रतिष्ठित करने में स्वातंत्र्यवीर सावरकर, वामन पंडित, खांडेकर, कवि गोविंद केलकर जैसे विद्वानों ने भी अपना अतुलनीय योगदान दिया है। जिसे भूलाया नहीं जा सकता। इनके योगदान के कारण ही तो हिंदी 'राष्ट्रभाषा' के पद पर विराजमान हुई है।

हिंदी विभाग,
टिकाराम जगन्नाथ महाविद्यालय
खडकी, पुणे–03